जेंडर निर्देशिका

जेंडर निर्देशिका (2017)

संकल्पना और संपादन

राकेश कु. सिंह, पी.एच.डी.

कंटेंट डेवेलपमेंट

मलिका बासु, पी.एच.डी.
डेवलपमेंट इनिशिएटिव्स फॉर चेंज (डीआई4सी) –
एम.बी. नॉलेज मैनेजमेंट एंड कंसल्टेंसी सर्विसेज

संपादन सहयोग

शैरन फर्डीनेंड्स

विशेष सहयोग

संदीप टिर्की, ममता दुबे
निव्रिता दुर्गवंशी, बलिराम बलसराफ
रवाला विजय किरण

आवरण (अवधारणा और डिजाइन)

जेम्स स्कॉट एडवर्ड्स

न्यू एजुकेशन ग्रुप – फाउंडेशन फॉर इनोवेशन एंड रिसर्च इन एजुकेशन (एन.ई.जी. फायर), नई दिल्ली

जनवरी 2017 में प्रकाशित

जेंडर निर्देशिका

प्रस्तावना

वर्ष 2015 में न्यू एजुकेशन ग्रुप – फाउन्डेशन फॉर इनोवेशन एन्ड रिसर्च इन एजुकेशन (NEG-FIRE) ने 'शिक्षा के माध्यम से परिवर्तन' के सफल हस्तक्षेप का एक दशक पूरा किया।

शिक्षा एक बुनियादी मानव अधिकार है, और व्यक्तिगत और सामाजिक विकास के लिए एक उत्प्रेरक भी। शिक्षा के क्षेत्र में जेंडर की बात करना केवल लड़कियों की स्कूली शिक्षा के बारे में बात करना नहीं होता, मसलन, उनका नामांकन, भागीदारी व उपलब्धियाँ। हालांकि सामाजिक–आर्थिक बाधाएँ और सामाजिक–सांस्कृतिक मानदंड लड़के–लड़कियों दोनों के लिए अवरोधक हैं, पर ज्यादातर मामलों में लड़कियों को अधिक नुकसान उठाना पड़ता है।

एक जेंडर–संवेदनशील शिक्षा प्रोग्राम यह सुनिश्चित करता है कि सभी उम्र के लड़कियों–लड़कों तथा महिलाओं–पुरुषों को – चाहे वे किसी भी जाति, धर्म, वर्ग और क्षेत्र के हों – गुणवत्तापरक शिक्षा के अवसर प्राप्त हैं, बगैर बहिष्कार और भेदभाव के।

यह जेंडर निर्देशिका एन.ई.जी–फायर (NEG-FIRE) की 'सबों के लिए गुणवत्तापरक शिक्षा' की प्रतिबद्धता का एक हिस्सा है, जिसमें भारत के हाशिये और कमजोर समुदायों की बच्चियों और किशोरियों पर विशेष ध्यान दिया जाता है।

पिछले दस वर्षों में एन.ई.जी–फायर पल्लवित और विकसित हुआ है। हालांकि, सर्वाधिक वंचित समुदायों और सबसे गरीब जिलों की बच्चियों तक पहुँच बनाना एक महत्वपूर्ण चुनौती रही है, ताकि उन्हें शिक्षा के अवसर मिलें, वे शिक्षित हों, और उनका विकास संभव हो।

यह जेंडर निर्देशिका इस प्रकार एन.ई.जी–फायर द्वारा साथी संस्थाओं को एन.ई.जी–फायर समर्थित शिक्षा प्रोग्रामों में जेंडर समाहित करने और इस दिशा में उनकी तकनीकी क्षमता बढ़ाने हेतु एक महत्वपूर्ण पहल है। आशा है कि साथी संस्थाएं जेंडर–लेंस का उपयोग कर अपने काम की समीक्षा करेंगे । यह आशा भी है कि साथी संस्थाओं को इससे **सबों के लिए, खासकर लड़कियों और किशोरियों के लिए,** शिक्षा के अधिकारों को सुनिश्चित करने में मदद मिलेगी।

एक आसान और व्यावहारिक टूल के रूप में, इस निर्देशिका की मदद से साथी संस्थाएं जेंडर विचार–विमर्श कर सकते हैं, अपने कार्यक्षेत्र में जेंडर असमानताओं व विभेदों का विश्लेषण कर सकते हैं, लड़कियों और महिलाओं तथा लड़कों और पुरुषों की क्षमताओं की पहचान कर सकते हैं, और संगठनात्मक क्षमता का अनुमान भी लगा सकते हैं। इसके अलावा, यह साथी संस्थाओं के महत्वपूर्ण हस्तक्षेपों की समीक्षा करने में, उनसे संबद्ध मौजूदा अवरोध या चुनौतियों की पहचान करने में, और जेंडर–लेंस की मदद से उनकी छोटी या बड़ी प्रगति, सीख व उपलब्धियों के दस्तावेजीकरण में भी सहायक होगा।

संक्षेप में, इस निर्देशिका के माध्यम से एन.ई.जी–फायर का उद्देश्य अपने साथी संस्थाओं को उनके शिक्षा–प्रोग्रामों के कार्यान्वयन में जेंडर–एकीकरण हेतु एक रणनीतिक सिद्धांत बनाने में मदद करना है।

एन.ई.जी–फायर इस निर्देशिका पर अपने सहयोगियों की राय को काफी महत्व देता है। निर्देशिका की बेहतरी व भविष्य में साथी संस्थाओं की विशिष्ट जरूरतों को संबोधित करने के लिए सुझाव सहायक सिद्ध होंगे। कृपया अपनी टिप्पणियां ई–मेल द्वारा रिसर्च और एडवोकेसी यूनिट में info@negfire.org को भेजें।

वेंगटेश कृष्ण

कार्यकारी निदेशक

क
ह
श
1
5
अ
ए
ज
3
च
5
र
ए
6
म
अ
2
च
न

विषय सूची

प्रस्तावना iii

परिचयात्मक टिप्पणी : जेंडर तथा संबंधित अवधारणाओं की पारिभाषा vii

भारत के बारे में कुछ तथ्य ix

अनुभाग 1 : निर्देशिका के विषय में **1**

जेंडर निर्देशिका क्यों? 1

निर्देशिका विकसित करने की पृष्ठभूमि 1

इस निर्देशिका का उपयोग कैसे करें 3

अनुभाग 2 : शैक्षिक परियोजनाओं में जेंडर को समझना/चिन्हित करना **4**

शिक्षा में जेंडर संबंधी प्रमुख मुद्दे 4

अनुभाग 3 : प्रोग्राम चक्र (Programme Cycle) का जेंडर लॉग–फ्रेम **8**

प्रोग्राम चक्र के प्रमुख घटकों का अवलोकन 8

अनुभाग 4 : शैक्षिक परियोजनाओं में 'जेंडर एकीकरण' **16**

सांगठनिक क्षमता और विकास 16

विभिन्न हितधारकों से साझेदारियों का विकास 17

समापन टिप्पणी : जेंडर निर्देशिका से सबक **20**

परिचयात्मक टिप्पणी

जेंडर तथा संबंधित अवधारणाओं की पारिभाषा

जेंडर एकीकरण की समझ विकसित करने के लिए जेंडर से संबंधित कुछ प्रमुख अवधारणाओं को समझना आवश्यक है। ऐसी कुछ अवधारणाओं का नीचे उल्लेख किया गया है।

'सेक्स' और 'जेंडर'

'सेक्स' और 'जेंडर' शब्द एक दूसरे के पर्याय नहीं हैं। व्यक्ति के 'जैविक और शारीरिक लक्षणो' के आधार पर सेक्स का संबंध पुरूष या महिला लिंग से है। जेंडर का अर्थ किसी लिंग/सेक्स से जुड़ी सामाजिक या सांस्कृतिक विशिष्टताओं से है। समाजीकरण की प्रक्रिया के माध्यम से अविरत जारी ऐसी विशिष्टताएँ महिलाओं और पुरूषों के लिए 'उपयुक्त' भूमिकाओं, ब्यवहारों, क्रियाकलापों और यहाँ तक कि अवसरों का निर्धारण करती हैं। जेंडर संबंधी गुण, संस्कृतियों के अनुसार अलग–अलग होते हैं; वे संदर्भ या समय के अनुसार विशिष्ट होते हैं, और परिवर्तनीय होते हैं। भारत सहित अनेक समाजों में महिलाओं व पुरूषों को सौंपी जाने वाली जिम्मेदारियों के बीच, किए जाने वाले क्रियाकलापों, संसाधनों तक पहुंच और उन पर नियंत्रण, तथा निर्णय–सृजन प्रक्रियाओं के मामलों में अंतर होते हैं। साथ ही, जेंडर लगभग सदैव वर्ग, जाति, निर्धनता, नृजातीयता (ethnicity), धर्म, आयु से अंतर्संबंधित होता है–यह महिलाओं व पुरूषों के बीच तथा महिलाओं व पुरूषों के आपसी रिश्तों के बीच शक्ति संबंधों को परिलक्षित करता है।

जेंडर संबंधी पूर्वाग्रह

जेंडर संबंधी पूर्वाग्रह–उदाहरण के लिए, लड़के को अधिक वरीयता दिए जाने के कारण कन्या भ्रूणहत्या के बढ़ते मामले–किसी एक जेंडर को दूसरे पर वरीयता देने या पक्षपात करने से जुड़ा है। लोगों के निजी मूल्य, दृष्टिकोण और बोध, लड़कियों और लड़कों, महिलाओं और पुरूषों से किए जाने वाले व्यवहारों में अनुचित अंतर उत्पन्न कर सकते हैं। पूर्वाग्रह सायास या अनायास हो सकते हैं, और अनेक सूक्ष्म व स्पष्ट तरीकों से प्रकट होते हैं। समानतायुक्त समाज स्थापित करने की समग्र आकांक्षा ने कानूनी प्रणालियों को जन्म दिया, जो पूर्वाग्रह समाप्त करके जेंडर संबंधी पूर्वाग्रह निषिद्ध करने वाले कानून लागू करने के लिए हैं। उदाहरण के लिए, भारत में गर्भाधान–पूर्व तथा प्रसव–पूर्व निदान तकनीकें (पीसीपीएनडीटी) अधिनियम, 1994, कन्या भ्रूण हत्या के लिए उत्तरदायी लिंग निर्धारण तथा लिंग चयन की प्रथा समाप्त करने के लिए लागू किया गया है।

जेंडर समानता

जेंडर समानता केवल महिलाओं का मुद्दा नहीं है, न ही इसका यह अर्थ है कि महिलाएं और पुरूष समान हो जाएंगे। इसका अर्थ यह है कि महिलाओं और पुरूषों के अधिकार, जिम्मेदारियां और अवसर, इस पर निर्भर नहीं होने चाहिए कि उन्होंने पुरूष या महिला किस रूप में जन्म लिया है। अर्थात, जेंडर समानता की प्राप्ति तब होती है जब लड़कियां और लड़के, महिलाएं और पुरूष समाज के सभी सेक्टरों में समान अधिकारों और अवसरों का उपभोग करते हैं, और जहां उनके भिन्न व्यवहारों, आकांक्षाओं और आवश्यकताओं को समान रूप से मूल्यवान मानते हुए समर्थन किया जाता है। जेंडर समानता महिलाओं और पुरूषों के विभिन्न समूहों की विविधता को भी मान्यता देती है (उदाहरण के लिए, सीमांत/असुरक्षित समुदायों के लोग, धार्मिक/नृजातीय (ethnic) अल्पसंख्यक, समलैंगिक, निःशक्त व्यक्ति, आदि)।

जेंडर हिस्सेदारी

जेंडर हिस्सेदारी का अर्थ महिलाओं और पुरूषों के लिए समान प्रोग्रामों और सुविधाओं के निर्माण से नहीं है। इसके बजाय इसमें यह सुनिश्चित करने की अपेक्षा की जाती है कि हर कोई–*उसके लिंग के आधार पर किसी भेदभाव के बिना*–अवसरों, विकल्पों (और लाभों) की पूरी रेंज तक पहुंच सके जो उनकी ज़रूरतों, रूचियों और अनुभवों के अनुकूल हों। अतएव यह सुनिश्चित करने के लिए लड़कियों और महिलाओं के लिए कुछ गतिविधियां/हस्तक्षेप, लड़कों व पुरूषों के लिए गतिविधियों के समान हो सकते हैं, कुछ परिवर्तित हो सकते हैं, और कुछ एकदम भिन्न प्रकार के हो सकते हैं।

जेंडर एकीकरण

महिलाओं और पुरूषों के सरोकारों और अनुभवों को किसी प्रोग्राम/परियोजना चक्र का एक अभिन्न आयाम बनाने के लिए, जेंडर एकीकरण एक (वैश्विक) मान्यता प्राप्त रणनीति है। जेंडर एकीकरण से जेंडर आधारित अंतरों व असमानताओं की पहचान करने में मदद मिलती है। यह सुनिश्चित करता है कि कार्यक्रम से महिलाओं और पुरूषों को समान रूप से लाभ मिलें और उनके बीच असमानता को बढ़ावा ना मिले।

जेंडर समाकलनात्मक (integrative) रणनीतिया

जेंडर समाकलनात्मक रणनीतियाँ 'जेंडर पहलुओं' के समावेश वाले हस्तक्षेपों को बढ़ावा देती हैं, अर्थात ऐसे हस्तक्षेप मौजूदा जेंडर आधारित अंतरों, भूमिकाओं और मानकों पर विचार करते हुए लक्षित और कार्यन्वित किये जाते है, ताकि जेंडर–आधारित असमानताओं के समाधान हो सकें। जेंडर समाकलनात्मक रणनीतियों में सांगठनिक कर्मचारियों की जेंडर संबंधी सक्षमताएं (क्षमता सृजन प्रशिक्षणों के माध्यम से) बढ़ाना भी शामिल है।

जेंडर अवर्गीकृत डेटा

जेंडर अवर्गीकृत डेटा का संकलन (और विश्लेषण) किसी परियोजना/प्रोग्राम में जेंडर एकीकरण के लिए अत्यधिक महत्वपूर्ण है। जेंडर अवर्गीकृत डेटा, लिंग के आधार पर तुलना में सहायता के लिए एकत्रित और वर्गीकृत डेटा होता है। अर्थात यह लड़कियों और लड़कों, महिलाओं और पुरूषों के बीच मौजूद अंतर दर्शाने में मदद करता है। उदाहरण के लिए, स्कूलों में नामांकन, शैक्षिक प्रोग्रामों में भागीदारी, अवसरों तक पहुंच, संसाधनों का आवंटन आदि। इससे स्थानीय संदर्भ (तथा प्रोग्राम परिणामों का भी) के सटीक चित्रण में मदद मिलती है। साथ ही, महिलाओं और पुरूषों के एक जैसे समूह नहीं होते। महिलाओं के बीच और पुरूषों के बीच आयु, शिक्षा, तथा अन्य महत्वपूर्ण वर्गीकरणों (उदा. निःशक्तता, धर्म, शहरी/ग्रामीण निवास) के आधारों पर उल्लेखनीय अंतर होते हैं। जेंडर अवर्गीकृत डेटा महिलाओं और पुरूषों के विभिन्न समूहों की विविधता को मान्यता देते हुए, विभिन्न अनुभवों, आवश्यकताओं, रूचियों, और अवसरों व संसाधनों तक पहुंच के बारे में सूचनाएं एकत्रित करने में मदद कर सकता है।

जेंडर विश्लेषणात्मक जानकारी

जेंडर का समग्र विश्लेषण करना, एक मूल्यवान इंतियाजी (diagnostic) टूल है जिसे संगठनों द्वारा उनकी परियोजनाओं की आवश्यकता मूल्यांकन (Need assessment) के भाग के रूप में अवश्य लागू किया जाना चाहिए। इस प्रकार एकत्रित सूचनाएं एक सकारात्मक परिवर्तन के लिए प्रोग्राम विकसित करने और उसके बाद सर्विस डिलीवरी में मदद कर सकती हैं। जेंडर विश्लेषणात्मक जानकारी से जेंडर–आधारित अंतर और असमानताएं उत्पन्न करने वाली विभिन्न दशाएं चिन्हित करने में मदद मिलती है। इससे यह सुनिश्चित करने में मदद मिलेगी कि जेंडर–आधारित अन्याय और असमानताएं, प्रोग्राम हस्तक्षेपों द्वारा प्रेरित न की जाएं और यह कि लड़कियों व लड़कों, महिलाओं और पुरूषों की विभिन्न ज़रूरतें पूरी की जाएं।

जेंडर समता

जेंडर समता, महिलाओं के पहुंच स्तर का पुरूषों के पहुंच स्तर से अनुपात है। यह शिक्षा प्राप्त करने के लिए पहुंच, कार्यस्थल पर, तथा शीर्ष निर्णयकर्ता पद धारण करने संबंधी पहुंच के अनुपात हो सकते हैं। शिक्षा में जेंडर समता के विश्लेषण का अर्थ आरंभिक बाल्यावस्था विकास प्रोग्रामों सहित शिक्षा के प्रत्येक स्तर पर भागीदारी और अवसरों की तुलना से है। जेंडर समता शिक्षण कर्मचारियों, अन्य शैक्षिक कार्मिकों में भी देखी जा सकती है। जहां जेंडर समता नहीं होती वहां जेंडर अंतराल होता है।

भारत के बारे में कुछ तथ्य

शिक्षा पर राष्ट्रीय नीति (एनपीई, 1986, संशोधित 1992) के अतिरिक्त, जिसमें कहा गया है कि *शिक्षा, किसी व्यक्ति के समग्र विकास के लिए आधारभूत रूप से अनिवार्य है,* और सीमांत समूहों हेतु विशेष प्रोग्रामों के महत्व पर जोर दिया गया है और अल्पसंख्यक समूहों तथा समाज के अन्य पिछड़े वर्गों की ओर ध्यान देने की आवश्यकता चिन्हित की गई है, भारत अनेक अंतर्राष्ट्रीय संधियों का भी हस्ताक्षरी है। इन संधियों में शामिल है :

बाल अधिकारों की घोषणा (1959), जिसमें कहा गया है कि प्रत्येक बच्चे को मुफ्त और अनिवार्य प्राथमिक शिक्षा अवश्य दी जाए; *आर्थिक, सामाजिक और सांस्कृतिक अधिकारों पर अंतर्राष्ट्रीय सहमति* (1966), जिसमें प्रत्येक व्यक्ति के शिक्षा के अधिकार को मान्यता दी गई है और यह कहा गया है कि प्राथमिक शिक्षा सभी के लिए अनिवार्य तथा निःशुल्क उपलब्ध होनी चाहिए; तथा *संयुक्त राष्ट्र (यूएन) बाल अधिकार संधिपत्र* (1989), जो कि किन्हीं आधारों पर बिना भेदभाव के समस्त बच्चों के लिए शिक्षा का अधिकार सुनिश्चित करता है, ऐसी कुछ संधियों में शामिल हैं।

भारत ने संयुक्त राष्ट्र सहस्राब्दि विकास लक्ष्यों (एमडीजी) के अलावा सभी के लिए शिक्षा (ईएफए, 2000) लक्ष्यों का भी समर्थन किया है और हाल ही में धारणीय (sustainable) विकास लक्ष्यों (देखें अनुभाग 1) को अपनाया है।

ईएफए प्रतिबद्धताओं के अलावा, सरकार ने विशिष्ट प्रोग्राम जैसे कि *राष्ट्रीय साक्षरता मिशन (एन.एल.एम.)* और *सर्व शिक्षा अभियान (एसएसए)* लागू किए हैं। सार्वभौमिक प्रारंभिक शिक्षा हेतु एसएसए पहला राष्ट्रव्यापी प्रोग्राम है, जिसे देश के प्रत्येक मजरे में प्रत्येक बच्चे तक एक निर्धारित समयसीमा में पहुंचने के लिए शुरू किया गया है।

2009 में, बच्चों के लिए निःशुल्क एवं अनिवार्य शिक्षा का अधिकार अधिनियम (आर.टी.ई अधिनियम) के क्रियान्वयन ने शिक्षा के अधिकार को भारत में एक मौलिक अधिकार बना दिया जबकि राज्य को 6 से 14 वर्ष आयु समूह के समस्त बच्चों को निःशुल्क और अनिवार्य शिक्षा प्रदान करने का दायित्व सौंपा गया।

हालांकि लैंगिक समानता तथा शिक्षा के सार्वभौमीकरण के लिए दशकों की प्रतिबद्धता के बावजूद जमीनी वास्तविकताएं अभी भी निराशाजनक हैं, विशेषकर सीमांत समूहों और ग्रामीण क्षेत्रों की बालिकाओं के संदर्भ में।

अनुभाग 1

निर्देशिका के विषय में

जेंडर निर्देशिका क्यों?

एनईजी–फायर की जेंडर निर्देशिका इसके पार्टनर संगठनों को बच्चों की शिक्षा व विकास के क्षेत्र में उनके कार्य में जेंडर आधारित मुद्दों को बेहतर समझने, मानने और समाधान करने में सहायता के लिए डिजाइन की गई है।

जेंडर को स्पष्ट करना तथा 'प्रोग्राम–चक्र' प्रचालन में जेंडर एकीकरण को सुदृढ़ बनाने के लिए स्पष्ट मार्गदर्शन प्रदान करना इस निर्देशिका का ध्येय है।

पढ़ने और समझने में आसान, यह व्यावहारिक निर्देशिका, पार्टनरों को उनकी एनईजी–फायर समर्थित शैक्षिक परियोजनाओं में एक स्पष्ट तत्व के रूप में जेंडर की तरफ अधिक ध्यान देने में सक्षम और समर्थ बनाएगी। यह जेंडर निर्देशिका पार्टनरों को निर्देशित करने के बजाय उनको सक्षम बनाने के लिए है।

निर्देशिका विकसित करने की पृष्ठभूमि

इस निर्देशिका को एनईजी–फायर के *शिक्षा के माध्यम से सामाजिक रूपांतरण* के लक्ष्य जो कि सबसे सीमांत समुदायों के बच्चों सहित 'सभी बच्चों के लिए निष्पक्ष, उचित और समानतायुक्त' परिवेश में गुणवत्तापरक शिक्षा सुनिश्चित करने से जुड़ा है, के अनुरूप विकसित किया गया है।

> यह निर्देशिका पार्टनरों को प्रासंगिक प्रश्न पूछने के लिए उत्साहित करता है, वे सहभागी और समावेशी तरीकों से जानकारी एकत्र कर सकें, अपनी रणनीतियों की समीक्षा कर सकें, तथा बेहतर विकास और शैक्षणिक परिणाम परिलक्षित हों, जो जेंडर विशिष्ट हों, विशेषकर लड़कियो व किशोरियो की जरूरतों को पूरा कर सकें।

हस्तक्षेप वाले क्षेत्रों में, सीमांत समुदायों के बच्चों का शैक्षिक उन्नयन एक महत्वपूर्ण पहलू है जिस पर एनईजी–फायर का ध्यान केंद्रित है। ऐसा करने के लिए यह जमीनी संगठनों को बढ़ावा देता और सशक्त बनाता है जो प्रायः सीमांत समुदायों के बीच कार्य करते हैं। इस संदर्भ में, यह पार्टनरों को उनकी तकनीकी और संस्थागत क्षमताएं सुदृढ़ बनाने के लिए भी सहयोग प्रदान करता है।

निम्न दो लक्ष्यों को ध्यान में रखते हुए इस जेंडर निर्देशिका को विकसित किया गया है :

- जेंडर संबंधी मुद्दों के बारे में पार्टनरों की समझ बढ़ाने में सहायता करना
- पार्टनरों को उनके प्रोग्राम चक्र में जेंडर एकीकरण हेतु प्रोत्साहित करना व सक्षम बनाना।

यह निर्देशिका पार्टनरों को उनके जेंडर पथ की निगरानी करने में मदद करेगी।

इसके अलावा, यह निर्देशिका भारत में एकीकृत बाल विकास सेवा (आईसीडीएस) योजना तथा बच्चों के लिए निःशुल्क एवं अनिवार्य शिक्षा का अधिकार अधिनियम (आरटीई), 2009 के दायरे में बच्चों की शिक्षा के लक्ष्यों की पूर्ति की दिशा में योगदान करने हेतु एनईजी–फायर के व्यापक दृष्टिकोण के भी अनुरूप है।

समस्त बच्चों को निःशुल्क एवं अनिवार्य शिक्षा प्रदान करने का लक्ष्य भारत के संविधान में एक मौलिक अधिकार के रूप में प्रतिष्ठित किया गया है। यह 'सभी के लिए शिक्षा (EFA)[1], पर वैश्विक घोषणा के भी केंद्र में है। अप्रैल, 2000 में अंतर्राष्ट्रीय समुदाय ने सभी के लिए शिक्षा पर कार्यवाही हेतु 'डकार रूपरेखा' को अपनाया और छह लक्ष्य चिन्हित किए। सितम्बर 2000 में, भारत सहित संयुक्त राष्ट्र के सदस्य देशों ने संयुक्त राष्ट्र सहस्राब्दि घोषणा को अपनाया, जिसमें निर्धनता व बहिष्करण से लड़ने के लिए आठ संयुक्त राष्ट्र सहस्राब्दि विकास लक्ष्य (एमडीजी) निर्धारित किए गए हैं।

2015 में ईएफए और एमडीजी दोनों की प्राप्ति की दिशा में गिरावट देखी गई। हालांकि पूरे विश्व में इसे लेकर गंभीर चिंता है कि शिक्षा की गुणवत्ता कमजोर है और लड़कियों सहित सीमांत समूह पीछे छूटे हुए हैं। एमडीजी का अनुसरण और विस्तार करते हुए संयुक्त राष्ट्र के सदस्य देशों के लिए नए लक्ष्यों और संकेतकों के साथ लक्ष्यों का एक नया सार्वभौमिक सेट–धारणीय विकास के लक्ष्य (एसडीजी) प्रस्तावित किया गया जो इन देशों द्वारा अगले 15 वर्षों (2015-2030) के दौरान उनके एजेंडों व राजनैतिक नीतियों को आकार देने में उपयोग करने के लिए हैं।

'सभी के लिए शिक्षा' के लक्ष्य पर आगे बढ़ने की भारत तथा वैश्विक समुदाय की प्रतिबद्धता के अनुरूप, एनईजी–फायर के शैक्षिक विकास के लक्ष्य और हस्तक्षेप की रणनीति समावेशन के माध्यम से समानता प्राप्त करने के लिए हैं। चूंकि एनईजी–फायर स्थानीय–जमीनी स्तर के पार्टनरों के साथ काम करता है, इसलिए यह शैक्षिक प्रोग्रामों में समावेशन और समानता के मुद्दों को हल करने के लिए अपनी व अपने पार्टनरों की क्षमताएं विकसित करने को बहुत महत्वपूर्ण मानता है।

यह निर्देशिका, पार्टनरों द्वारा उनके परियोजना क्षेत्रों में संचालित हस्तक्षेपों पर काफी सीमा तक आधारित है। चार स्थानों पर क्षेत्रीय भ्रमण आयोजित किए गए :

- **जन शिक्षा भवन (जेएसबी),** गौनाहा–बिहार के बेतिया में रूरल एजुकेशन एंड डेवेलपमेंट (आरईएडी) का एक विस्तार/आउटरीच केंद्र
- बूंदी, राजस्थान में **शिव शिक्षा समिति रनोली (एसएसएसआर)**
- महाराजगंज, उत्तर प्रदेश में **रूरल आर्गनाइजेशन फॉर सोशल एडवांसमेन्ट (आरओएसए)**
- डिंडोरी, मध्य प्रदेश में **समर्पण**

सभी के लिए शिक्षा के लक्ष्य पर प्रगति हेतु वैश्विक समुदाय की प्रतिबद्धता

ईएफए लक्ष्य

लक्ष्य 1 : आरंभिक बाल्यावस्था देखभाल व शिक्षा का विस्तार

लक्ष्य 2 : समस्त के लिए निःशुल्क और अनिवार्य प्राथमिक शिक्षा उपलब्ध कराना

लक्ष्य 3 : युवाओं और वयस्कों हेतु शिक्षण व जीवन कौशल प्रोत्साहित करना

लक्ष्य 4 : वयस्क साक्षरता में वृद्धि करना

लक्ष्य 5 : जेंडर समता प्राप्त करना

लक्ष्य 6 : शिक्षा की गुणवत्ता में सुधार करना

एमडीजी लक्ष्य (8 लक्ष्य)

लक्ष्य 2 : सार्वभौमिक प्राथमिक शिक्षा की प्राप्ति करना

लक्ष्य 3 : जेंडर आधारित समानता को प्रोत्साहन और महिलाओं का सशक्तिकरण

एसडीजी लक्ष्य (17 लक्ष्य)

लक्ष्य 4 : सभी के लिए समावेशी और गुणवत्तापरक शिक्षा सुनिश्चित करना और जीवनपर्यन्त शिक्षण को प्रोत्साहित करना

लक्ष्य 5 : जेंडर आधारित समानता की प्राप्ति तथा समस्त महिलाओं व लड़कियों का सशक्तिकरण

[1] अधिक जानने के लिए, देखें EFA: http://www-un-org/en/globalissues/briefingpapers/efa/indeÛ-shtml

क्षेत्रीय भ्रमणों से मिली सीखों ने इस निर्देशिका को उन सामाजिक–सांस्कृतिक वास्तविकताओं के अनुरूप बनाने में योगदान किया है, जिनमें एनईजी–फायर के पार्टनर कार्य करते हैं।

इस निर्देशिका का उपयोग कैसे करें

अधिकांशतः सरल और समझने में आसान बनाने के लिए, इस निर्देशिका को प्रश्नों की जांचसूची की तरह तैयार किया गया है – या सही प्रश्न पूछने के रूप में – ताकि यह सुनिश्चित किया जा सके कि कुछ भी महत्वपूर्ण छूट नहीं गया है।

इस निर्देशिका को चार अनुभागों में बांटा गया है। इसके अतिरिक्त एक परिचयात्मक अनुभाग है जो जेंडर संबंधी कुछ मूल अवधारणाओं को पारिभाषित करता है जो पार्टनरों को (उनकी शैक्षिक परियोजनाओं में) जेंडर एकीकरण संबंधी समझ हेतु प्रासंगिक होंगी। अंत मे, एक समापन अनुभाग है जो पार्टनरों को जेंडर एकीकरण के बारे में एक (त्वरित) समीक्षा करने या उनकी समझ (और कार्य) के बारे में चिंतन करने में सक्षम बनाने के लिए है।

खासतौर से, **अनुभाग 2–4** को इस तरह से प्रस्तुत किया गया है कि प्रत्येक अनुभाग में कमोवेश शामिल है :

A. एक स्पष्ट उल्लेखित उद्देश्य

B. रेखांकित विषयवस्तु, अर्थात कवर की गई थीमें/मुद्दे

C. प्रश्नों की एक जांचसूची प्रदान की गई है (इसका महत्व भी बताया गया है, अर्थात ऐसे प्रश्न क्यों महत्वपूर्ण हैं, और अतएव पूछे जाने या उन पर चर्चा की जानी चाहिए)

D. 'जांच–सूची' अनुसरण करने के परिणामस्वरूप संभावित (प्रत्याशित) परिणामों के नमूना उदाहरण दिए गए हैं – पार्टनरों को फील्ड साइट पर पाए जाने वाले वास्तविक उदाहरणों पर चर्चा/उल्लेख/टिप्पणी लिखनी होगी। इससे पार्टनरों को अधिक व्यवस्थित ढंग से रिपोर्टिंग और दस्तावेजीकरण करने में भी सहायता मिलेगी।

E. एक या दो सारभूत बिंदुओं को संक्षेपित किया गया है।

F. 'मुख्य सबक' – पार्टनर संगठनों के लिखने के लिए उस अनुभाग से एक या दो अनिवार्य सीखें।

साथ ही, 2–4 में से प्रत्येक अनुभाग को इस प्रकार लिखा गया है कि पार्टनर उन पर पृथक रूप से अध्ययन, चर्चा और चिंतन कर सकते हैं।

यह निर्देशिका, एक बार प्रयोग की जाने वाली अभ्यास–पुस्तिका नहीं है। इसके बजाय यह अपेक्षित है कि पार्टनर अपने कार्यकर्त्ताओं के बीच आंतरिक चर्चा के लिए इसे निरंतर संदर्भ उपकरण की तरह उपयोग करें, अपने कार्य की समीक्षा करने के लिए इसका उपयोग करें तथा अपने सबक लिखने के लिए भी इसका उपयोग करें। इससे पार्टनरों को उनके जेंडर पथों (pathways) के बारे में बेहतर रिपोर्ट करने में मदद मिलेगी। इसके अलावा, यह पार्टनरों को उनकी शैक्षिक परियोजनाओं के क्रियान्वयन के दौरान सामना किए जाने वाले मुद्दे या अनवरत अवरोधक संकेतित करने के अलावा उनकी छोटी–बड़ी उपलब्धियां लिखने में भी सक्षम बनाएगी।

मार्गनिर्देशिका की रूपरेखा

प्रस्तावना

परिचयात्मक टिप्पणी – जेंडर तथा संबंधित अवधारणाओं को पारिभाषित करना

अनुभाग 1

निर्देशिका के विषय में

- जेंडर निर्देशिका क्यों?
- यह निर्देशिका विकसित करने की पृष्ठभूमि
- इस निर्देशिका का उपयोग कैसे करें

अनुभाग 2

शैक्षिक परियोजनाओं में जेंडर को समझना/चिन्हित करना

- शिक्षा में जेंडर संबंधी प्रमुख मुद्दे

अनुभाग 3

एक परियोजना चक्र का जेंडर लॉग–फ्रेम

- प्रोग्राम चक्र के प्रमुख घटकों का अवलोकन

अनुभाग 4

शैक्षिक परियोजनाओं में 'जेंडर एकीकरण'

- सांगठनिक क्षमता और विकास
- विभिन्न हितधारकों से साझेदारियां कायम करना

समापन टिप्पणी – जेंडर निर्देशिका से सबक

अनुभाग 2

शैक्षिक परियोजनाओं में जेंडर को समझना/चिन्हित करना

सरल रूप में, शैक्षिक परियोजनाओं में जेंडर को समझने के लिए जेंडर संबंधी दृष्टिकोण (जेंडर लेन्स) का उपयोग करना होता है। जेंडर लेन्स का उपयोग करने के लिए अधिक विशेषज्ञता की ज़रूरत नहीं होती। हालांकि इसके लिए यह आवश्यक है कि हम 'सामाजिक–सांस्कृतिक' संदर्भ के प्रति जागरूक हों, जो लड़कियों/महिलाओं के प्रति अनुचित व पक्षपातपूर्ण हो सकता है। सामाजिक–सांस्कृतिक विश्वास, समुदाय के लोगों, बुजुर्गों या अभिभावकों के बोध और दृष्टिकोण – परंपराओं या मानकों के नाम पर – एक स्पष्ट या कम स्पष्ट तरीका है – जो प्रायः लड़कियों और महिलाओं को घरेलू दायरे में बांधता है और उनको एक वंचित स्थिति में भी रखता है जो उनकी शिक्षा को विपरीत रूप से प्रभावित करती है।

अनुभाग के उद्देश्य

शिक्षा में जेंडर असमानताएं उत्पन्न करने की दिशा में योगदान करने वाले प्रमुख मुद्दों को समझना, विशेषकर लड़कियों की शिक्षा में बाधा पहुंचाने वाले कारकों/रूकावटों को समझना इस अनुभाग का उद्देश्य है।

- रूकावटों की पहचान असमानताओं की मैजूदगी की वजहों को बेहतर समझने में मदद करता है – यह तय करने में कि वे हानिकारक हैं या नहीं और यदि हैं तो उन्हें किस प्रकार ठीक किया जा सकता है।
- अपने हस्तक्षेप क्षेत्र में विभिन्न स्तरों पर – घर, समुदाय, स्कूल (शिक्षा नीति भी) – रूकावटों की पहचान करना, जेंडर आधारित पूर्वाग्रह और भेदभाव समाप्त करने की दिशा में पहला कदम है।

जेंडर संबंधी प्रमुख मुद्दों को चिन्हित करना – 'अवरोध'

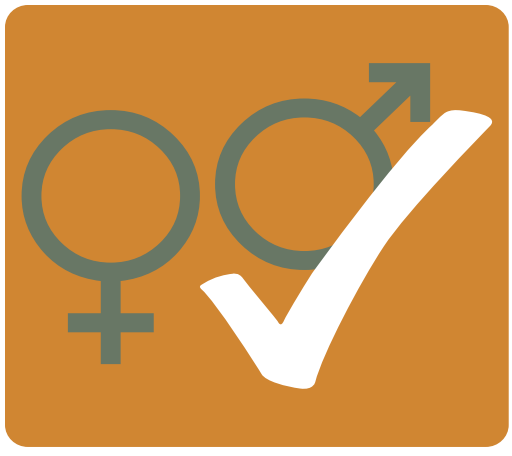

अनेक लड़कियों/महिलाओं के लिए जेंडर असमानता उनके जीवन तथा उनके शिक्षा के अनुभवों की भी विशेषता है। यद्यपि जेंडर समता में सुधार हुआ माना जाता है, लेकिन जेंडर विषमताएं और भेदभाव उत्पन्न करने वाले अवरोध और रूकावटें बने हुए हैं, विशेषकर माध्यमिक स्कूल स्तर पर तथा अति सीमांत बच्चों के बीच।

एक या कई कारक एक अवरोधक/प्रतिबंध की तरह कार्य करते हैं (जांचसूची बॉक्स देखें)। *उदाहरण के लिए,* मजबूत सांस्कृतिक मानक लड़कों की शिक्षा का समर्थन करते हैं, तब भी जब परिवार के पास संसाधन सीमित हों; स्कूलों में अपर्याप्त स्वच्छता सुविधाएं अर्थात लड़कियों और लड़कों के लिए निजी व पृथक शौचालयों का अभाव; स्कूलों में पर्याप्त संख्या में महिला शिक्षकों का अभाव; कक्षाओं के नकारात्मक वातावरण, आदि। साथ ही, घरेलू दायित्वों, बाल श्रम, बाल विवाह, से लेकर शीघ्र गर्भधारण तक अनेक कारणों से किशोरियों की शिक्षा बाधित हो जाती है।

बाधाएँ आम दिखायी देती हैं, हालांकि प्रत्येक क्षेत्र/स्थान अपनी विशिष्टताओं से बंधी है। अतः लड़कियों को शैक्षिक नुकसान की ओर अग्रसर करती जेंडर सम्बन्धी बाधाओं की पहचान महत्वपुर्ण है। यह हर उस हस्तक्षेप को सुचारू ढंग से चलाने मे मदद करता है जिसें स्थानीय संदर्भ मे सांस्कृतिक स्तर पर मान्यता मिली हुई है।

जांच–सूची बॉक्स (नीचे तालिका देखें)

नीचे दी तालिका में **कई मुद्दे दर्शाए गए हैं जो शिक्षा में जेंडर पूर्वाग्रहों को प्रभावित कर सकते हैं।** इन मुद्दों और उनके अनुवर्ती प्रभावों का समाधान करने के लिए, पार्टनर विभिन्न हस्तक्षेप रणनीतियां अपनाते हैं। जहां यह विश्लेषण करना महत्वपूर्ण है कि अपनाई गई रणनीतियों से अपेक्षित परिणाम मिलेंगे या नहीं; वहीं प्रत्येक मुद्दे को लेकर जागरूकता भी समान रूप से महत्वपूर्ण है जिनके कारण जेंडर पूर्वाग्रह उत्पन्न होते हैं या जेंडर संबंधी परिणाम प्रभावित होते हैं। कुछ मुद्दों के आसानी से समाधान संभावित होते हैं; लेकिन निरंतर अवरोधक भी हो सकते हैं। उस स्थिति में, पार्टनरों को समीक्षा और चिंतन करना होगा कि उनके समाधान के लिए संभव और व्यावहारिक तरीके क्या हो सकते हैं। रणनीतियों को संशोधित करने की आवश्यकता हो सकती है। (इसके लिए विशेषज्ञों के हस्तक्षेप की भी आवश्यकता हो सकती है।)

जांच सूची बॉक्स का महत्व

'जांच सूची बॉक्स' अनेक मुद्दों के बारे में स्पष्ट दृष्टिकोण उपलब्ध कराता है जो पार्टनरों के कार्य क्षेत्रों में जेंडर विषमताओं को प्रभावित करते हो सकते हैं। कई मुद्दे चिन्हित किए गए हैं, ऐसे और भी हो सकते हैं। कृपया पार्टनर उन्हें इस सूचि में शामिल करें –

- जांच सूची बॉक्स से अतर्कसंगत/दोषपूर्ण पूर्वमान्यताओं से बचाव करने में और ऐसे विशिष्ट मुद्दों पर केंद्रित होने में मदद मिलती है जो प्रोग्राम लक्ष्यों की जेंडर संबंधी उपलब्धियों में बाधा पहुंचाते हों।
- यदि प्रोग्राम चक्र के दौरान चिन्हित मुद्दों की समीक्षा विभिन्न समय बिंदुओं पर की जाए तो वे परिवर्तन के गतिशील संकेतकों के रूप में कार्य कर सकते हैं। इससे पार्टनरों को यह समझने में मदद मिलेगी कि क्या बदलाव हुआ है या हो रहा है।
- बिंदु यह है, कि सैद्धांतिक रूप से हम सभी अपने परिवेश के बारे में भलीभांति जागरूक रहते हैं लेकिन चूंकि हम उन पर सावधानीपूर्वक चिंतन नहीं करते, इसलिए हम आवश्यक बदलाव करने से और यह सुनिश्चित करने से चूक जाते हैं कि लागू किए गए प्रोग्राम प्रभावी हैं और वे जेंडर असमानताएं निर्मित या प्रेरित नहीं करते।
- संक्षेप में, सभी प्रमुख मुद्दों को लेकर सतर्क रहने से लड़कियों और लड़कों, महिलाओं और पुरूषों की विशिष्ट आवश्यकताओं और सरोकारों के समाधान करने में मदद मिलती है।

इस अनुभाग से सीखने योग्य बिंदु

- जेंडर लेन्स के उपयोग द्वारा रूकावटों या चुनौतियों को चिन्हित करने से वे वास्तविकताएं उजागर होंगी जो सभी आयु की लड़कियों और लड़कों, महिलाओं और पुरूषों की शैक्षिक परियोजनाओं में पहुंच और प्रतिभागिता प्रभावित करती हैं। ये चुनौतियां पहले उपेक्षित की गई या अनसुलझी छोड़ दी गई हो सकती हैं।
- अपने विशिष्ट संदर्भ और परिस्थिति के प्रति पूर्ण जागरूक रहने से प्रत्यक्ष विशिष्ट कार्यवाहियों/जेंडर के अनुसार विशिष्ट हस्तक्षेपों में सुगमता मिलेगी जो लड़कियों/महिलाओं को या लड़कियों और लडकों को एक साथ या केवल पुरूषों को लक्ष्य बनाते हैं (और उनकी विभिन्न आवश्यकताएं व हित पूरे करते हैं) – और किए गए हस्तक्षेपों में उन्हें भागीदारी करने व समान रूप से लाभान्वित होने में सक्षम बनाते हैं। कुछ हस्तक्षेप अस्थायी हो सकते हैं, जबकि अन्य दीर्घकालीन हो सकते हैं।

मुख्य सबक (आंतरिक चर्चाओं के दौरान पार्टनरों द्वारा भरे जाएं)

- .....
- .....
- .....
- .....
- .....

जेंडर संबंधी मुद्दे चिन्हित करना
(नमूना तालिका – पार्टनरों को समझने में सुविधा के लिए विषयवस्तु/उदाहरण केवल सांकेतिक हैं)

नोट : पार्टनर बालिका शिक्षा को प्रभावित करने वाले प्रमुख मुद्दों की सूची में अन्य जोड़ सकते है। (जैसा वे उनके क्षेत्रों में लागू हों) सभी अनुवर्ती कॉलमों पर चर्चा करने (और भरने) से पार्टनरों को उनके कार्य तथा जारी प्रयासों की निगाहबीनी रखने में मदद मिलेगी।

बालिका शिक्षा को प्रभावित करने वाले प्रमुख मुद्दे	निहितार्थ	प्रभाव	पार्टनरों के हस्तक्षेप	दृश्यमान परिणाम	(बने हुए) अवरोधक	(बने हुए) अवरोधक दूर करने के लिए संभावित समाधान
सामाजिक मानक एवं संस्कृति	गहरी जड़ों वाली मूल्य प्रणालियां; अलिखित नियम–परंपराओं और प्रथाओं के रूप में स्वीकृत–जिनकी लोगों द्वारा पुष्टि करने से जेंडर आधारित विभेदकारी प्रविधियां उत्पन्न होती हैं	बच्चों का स्कूल में नामांकन नहीं कराया जाता या वे स्कूल छोड़ देते हैं, विशेषकर लड़कियां	शैक्षिक नेताओं/स्वयंसेवकों के माध्यम से जागरूकता–सृजन; बालिका शिक्षा के महत्व पर अभियान; छोटे प्रोत्साहन प्रोग्राम (उदाहरण : छात्रवृत्तियां, स्कूली वस्तुएं और यूनिफार्म)	लड़कियां स्कूलों में अधिक रूकती हैं; स्कूल में नामांकन में जेंडर अंतराल कम हो जाता है	शीघ्र विवाह; बाल श्रम	उदाहरण : सामुदायिक प्रभावशाली लोगों (गांव के नेताओं, धार्मिक नेताओं) को शामिल करें जो समुदाय व उसकी मानसिकता को प्रभावित करने की स्थिति में हों
जेंडर आधारित पक्षपात	लड़कियों और लड़कों से अपेक्षाओं और उनके साथ व्यवहारों में अंतर होता है, जहां लड़कों को लड़कियों पर वरीयता दिए जाने के कारण लड़कियों के लिए शिक्षा के अवसर सीमित हो जाते हैं	लड़कियों का स्कूलों में नामांकन नहीं कराया जाता; या नामांकन के बावजूद वे पढ़ाई–लिखाई नहीं कर पातीं/घरेलू जिम्मेदारियां उठाती हैं	समुदाय के विभिन्न संवर्गों तक पहुंचने के लिए विविध सामुदायिक समूहों के गठन, जैसे कि माता समितियां, किशोरी और किशोर समूह, बाल मंच आदि	स्कूल में लड़कियों की संख्या बढ़ती है क्योंकि अभिभावक उन्हें भेजने के प्रयास करते हैं/पहल करते हैं	सामुदायिक समूह जेंडर संबंधी मुद्दों और उनके निहितार्थो से भलीभांति परिचित नहीं होते	सामुदायिक समूहों को जेंडर आधारित पूर्वाग्रहों के समाधान हेतु सुसज्जित करने के लिए विभिन्न पहलुओं को कवर करने वाली एक व्यवस्थित विधि के माध्यम से प्रशिक्षित किया जाता है
बोध और दृष्टिकोण	शिक्षा को महत्व नहीं दिया जाता; परिवारों के अंदर लड़कियों के विरूद्ध भेदभाव होता है	लड़कियां स्कूल जाने का अपना अधिकार छोड़ देती हैं	ग्राम समितियों, स्कूल प्रबंधन समितियों को सामुदायिक संवाद, बालिका शिक्षा में अभिभावकों की भागीदारी के माध्यम से लामबंदी हेतु प्रोत्साहित किया जाता है	स्कूली व्यवस्था में लड़कियों के नामांकन/प्रवेशों में वृद्धि	लड़कियों तथा महिलाओं की हीनभावना उन्हें घरेलू (और प्रजनन संबंधी) भूमिकाओं तक सीमित कर देती है	उदाहरण : जागरूकता अभियानों के माध्यम से स्कूल, समुदाय, अभिभावकों की सक्रिय सहभागिता; समुदाय में सकारात्मक रोल मॉडल निर्मित करना

Contd...

बालिका शिक्षा को प्रभावित करने वाले प्रमुख मुद्दे	निहितार्थ	प्रभाव	पार्टनरों के हस्तक्षेप	दृश्यमान परिणाम	(बने हुए) अवरोधक	(बने हुए) अवरोधक दूर करने के लिए संभावित समाधान
शिक्षा की गुणवत्ता, भाषा/अध्ययन के माध्यम सहित	पाठ्यक्रम का अभाव/ अप्रचलित होना; अपर्याप्त शिक्षण सामग्रियां; पक्षपातपूर्ण विषयवस्तु; शिक्षण हेतु प्रयुक्त भाषा बच्चों के लिए परिचित न होना या समझने में आसान न होना	बच्चे वह नहीं सीख सकते हैं जो उनके लिए आवश्यक होता है : साक्षरता, गणितीय ज्ञान और जीवन कौशल–आधारित शिक्षा; शिक्षण सामग्रियों के माध्यम से भेदभाव व रूढ़ियों को मजबूत बनाया जाता है	मातृभाषा आधारित शिक्षण अधिगम सामग्रियां (टीएलएम); जेंडर–संवेदी शैक्षिक सामग्री को प्रोत्साहन/पैरवी; कई ग्रेड वाली या अनौपचारिक प्रविधियों के रूप में संपूरक शिक्षा केंद्रों (एसईसी) की स्थापना और संचालन जो ब्रिज स्कूल के रूप में बच्चे को औपचारिक शिक्षा से जोड़ते है	सीखने के लिए बच्चों की रूचि में बढ़ोत्तरी (नई और नवप्रवर्तक टीएलएम के कारण)	नई टीएलएम, रूढ़ियों को भी सुदृढ़ करती है	स्कूलों में लड़कियों और लड़कों के साथ जेंडर संवेदीकरण सत्र; पढ़ने में आसान अभियान सामग्रियां; पोस्टर; स्थानीय भाषाओं में विकसित और प्रसारित सूचना पुस्तिकाएं; जिनमें शिक्षा के महत्व पर तथा जेंडर आधारित पूर्वाग्रहों के समाधान की आवश्यकता पर जोर दिया गया हो।
शिक्षकों की गुणवत्ता	अप्रशिक्षित/कम प्रशिक्षित शिक्षक; अप्रचलित शिक्षण तकनीकें; स्कूल का खराब प्रबंधन	बच्चों की पूरी क्षमता विकसित नहीं हो पाती; विशेषकर लड़कियों का गैरहाजिर रहना, स्कूल छोड़ देना।	शिक्षकों का क्षमता सृजन; शिक्षकों को शिक्षण कौशलों का प्रशिक्षण दिलाने के लिए स्कूल प्रबंधन से सहभागिता	शिक्षकों के लिए शिक्षण कौशल प्रशिक्षण/ जेंडर जागरूकता प्रशिक्षण	पूर्वाग्रह दिखाने वाले शिक्षक, स्कूल में लड़कियों के लिए नकारात्मक वातावरण बनाते हैं	स्कूलों में बच्चों के लिए सकारात्मक और अनुकूल परिवेश सुगम बनाने के लिए शिक्षकों का जेंडर आधारित संवेदीकरण
अवसरों का अभाव	घर के वातावरण के निकट स्कूल स्थित न होना; अभिभावक, लड़कियों को शिक्षित करने से कोई भावी लाभ नहीं देखते; साथ ही, स्कूलों में जल या स्वच्छता सुविधाओं का अभाव	लड़कियों में निम्न साक्षरता दरें; स्कूल छोड़ने की ऊंची दरें	स्कूलों को अधिक सुरक्षित और अधिक संरक्षित बनाने के लिए पैरवी; एसएमसी के माध्यम से स्कूलों व अभिभावकों के बीच संपर्क सुदृढ़ बनाते हैं; किशोरियों के लिए शिक्षण केंद्र	लड़कियां शिक्षण केंद्रों के माध्यम से कौशल सीखती/ अर्जित करती हैं	लड़कियों का प्राथमिक से माध्यमिक शिक्षा या स्कूल से कार्य की ओर सीमित स्थानांतरण	नियोजन सुधारने तथा 'बाल केंद्रित स्कूल' बनाने के लिए स्कूलों का मानचित्रण; अवसंरचना में सुधार (सार्वजनिक निजी भागीदारी–पीपीपी स्वरूप द्वारा)
सरकारी हस्तक्षेपों और प्रयासों का अभाव	समुदायों में योजनाओं/ प्रोग्रामों के बारे में सूचनाओं का अभाव; सरकारी योजनाओं के क्रियान्वयन का अभाव	सैद्धांतिक या व्यावहारिक रूप में शिक्षा निःशुल्क और अनिवार्य नहीं है	अनिवार्य शिक्षा के क्रियान्वयन हेतु जनपैरवी	स्कूल छोड़ने वालों के (पुनः) नामांकन (साथ ही गर्भवती लड़कियों की शिक्षा जारी रखा जाना)	विकल्प दिए जाने पर लड़कियां शिक्षा छोड़ना जारी रखती हैं	योजनाओं के बेहतर क्रियान्वयन के लिए सरकारी विभागों से पैरवी, और साझेदारियां कायम करना
जीवन कौशल आधारित शिक्षा का अभाव	शिक्षा को सकारात्मक रूप में नहीं देखा जाता क्योंकि यह परिवार की आय उपार्जन क्षमता में वृद्धि नहीं करती	प्राथमिक से माध्यमिक शिक्षा की ओर सीमित स्थानांतरण (विशेषकर लड़कियां)	किशोरियों के लिए शिक्षण केंद्र	शिक्षण केंद्रों पर आने वाली लड़कियों की संख्या में वृद्धि	जीवन कौशल सिखाने वाला सुसंगठित प्रोग्राम नहीं है	शिक्षण केंद्रों की कार्यप्रणाली की समीक्षा, उनको बेहतर सुसज्जित करना/सक्षम बनाना

अनुभाग 3

प्रोग्राम चक्र (Programme Cycle) का जेंडर लॉग–फ्रेम

जेंडर एकीकरण की चुनौतियां, प्रोग्राम चक्र के एक घटक का अवलोकन करके हल नहीं की जा सकतीं। प्रोग्राम का प्रत्येक घटक जेंडर–संवेदनशील परिणामों को सुगम बनाने में भूमिका निभाता है। किसी शैक्षणिक परियोजना में एक समावेशी शिक्षण परिवेश बनाने की दिशा में वे प्रत्यक्ष व परोक्ष योगदान करते हैं।

अनुभाग के उद्देश्य

इस तथ्य की ओर पार्टनरों का ध्यान खींचना तथा जोर देना इस अनुभाग का उद्देश्य है कि यदि किसी प्रोग्राम के निर्दिष्ट उद्देश्य पूरे करने हैं (उदाहरण के लिए, किसी सीमांत समुदाय में लड़कियों सहित सबों के लिए गुणवत्तापरक शिक्षा) तो प्रोग्राम चक्र के सभी चरणों में जेंडर को तर्कसंगत ढंग से अंतर्संबंधित और एकीकृत करना होगा।

जांच–सूची प्रश्न (नीचे देखें : प्रोग्राम चक्र घटक)

इस अनुभाग में जांचसूची के प्रश्न, प्रोग्राम चक्र के प्रत्येक घटक से संबंधित हैं।

ऐसा यह सुनिश्चित करने के लिए है कि प्रोग्राम और इसकी हस्तक्षेप रणनीतियां सामाजिक–सांस्कृतिक/आर्थिक संदर्भ की वास्तविक समझ पर आधारित हों। यह भी सुनिश्चित करना होगा कि विविध चरणों में डेटा संग्रह अवर्गीकृत प्रकार से किया जाए ताकि सीमांत और बहिष्कृत बच्चों, विशेषकर लड़कियों का परिमाण निर्धारित करने में बेहतर मदद मिले।

प्रोग्राम चक्र की जांचसूची को इस प्रकार से प्रस्तुत किया गया है कि प्रत्येक घटक पर पृथक से भी चर्चा की जा सकती है, और इसकी समीक्षा की जा सकती है कि घटक में जेंडर एकीकृत है अथवा नहीं। किसी प्रोग्राम चक्र में पार्टनरों को उनके जेंडर पथ को बेहतर समझने व विश्लेषण करने में सक्षम बनाने के लिए यह जानबूझकर किया गया है।

इस अनुभाग से सीखने योग्य बिंदु

- लड़कियां अनेक जेंडर आधारित जोखिमों का सामना करती हैं जो उनके स्कूल जाने व शिक्षा को प्रभावित करते हैं। शिक्षा से संबंधित किसी प्रोग्राम में इन जोखिमों के समाधान हेतु कई गतिविधियां शामिल की जाती हैं ताकि प्रोग्राम द्वारा निर्धारित लक्ष्य (एक निश्चित समय–सीमा में तथा एक निश्चित बजट में) पूरे किए जा सकें। कोई प्रोग्राम, अपने प्रोग्राम चक्र में अर्थात चिन्हांकन और आवश्यकताओं के मूल्यांकन से लेकर प्रोग्राम डिजाइन की योजना, और क्रियान्वयन से लेकर मूल्यांकन, और रिपोर्टिंग से लेकर दस्तावेजीकरण तक जेंडर को एकीकृत करके असमानताएं उत्पन्न करने वाले जोखिमों व चुनौतियों के सर्वोत्तम समाधान कर सकता है।
- पूरे प्रोग्राम चक्र में जेंडर का सफल एकीकरण, काफी हद तक जेंडर असमानताएं हल करने की संगठन की प्रतिबद्धता के साथ इन्हें हल करने की उसकी समझ व क्षमता पर भी निर्भर करता है।

मुख्य सबक (आंतरिक चर्चाओं के दौरान पार्टनरों द्वारा भरे जाएं)

- .....
- .....
- .....
- .....

प्रोग्राम चक्र घटक (नीचे चित्र देखें)

चिन्हांकन और मूल्यांकन

(परिस्थिति की मैपिंग/संदर्भ विश्लेषण)

अपने प्रस्ताव विकास (proposal development) के तहत पार्टनर, अपने विशिष्ट संदर्भ की पृष्ठभूमि लिखते/उपलब्ध कराते हैं। लेकिन बिरले ही कोई पार्टनर इसके अलावा कोई 'जेंडर आधारित विशिष्ट मूल्यांकन' करता है अर्थात ऐसा मूल्यांकन दस्तावेज जो उनके कार्यक्षेत्रों में विषमताएं, जेंडर आधारित असमान (शैक्षिक) अवसर उत्पन्न करने वाले तथा जेंडर संबंधी परिणामों (शिक्षा में) को प्रभावित करने वाले प्रत्येक संभावित मुद्दे की मैपिंग करता है।

विस्तृत जेंडर विशिष्ट मूल्यांकन (देखें अनुभाग 2 : शिक्षा में जेंडर संबंधी मुद्दों को चिन्हित करना, नमूना तालिका : पृष्ठ 9–11), से निम्न में बेहतर मदद मिलनी संभावित है :

- शिक्षा में जेंडर संबंधी मुख्य मुद्दों को चिन्हित करने में;
- हस्तक्षेप रणनीतियों/प्रोग्राम गतिविधियों को तद्नुसार डिजाइन/संशोधित करने में;
- चिन्हित मुख्य मुद्दों पर प्रतिक्रिया में रणनीतियों के परिणामों (एक समय के दौरान) का आकलन करने के लिए संकेतक तय करने में;
- साथ ही, इसकी समीक्षा करने में प्रत्येक या कुछ मुद्दों का किस सीमा तक या क्या समाधान किया गया है– *अवरोधकों/चुनौतियों*–के समाधान किए गए हैं और समय के साथ क्या प्रगति हुई है।

नियोजन एवं डिजाइन : प्राथमिकताएं, लक्ष्य और उद्देश्य

आवश्यकता मूल्यांकन (need assesment) या संदर्भ विश्लेषण हो जाने पर प्राथमिकताएं निर्धारित करते हुए, लक्ष्य और उद्देश्य तय करते हुए प्रोग्राम की योजना बनाई जाती है और डिजाइन किया जाता है।

एनईजी–फायर समर्थित प्रोग्रामों को लागू करने वाले पार्टनर प्रमुख रूप से 3–6, 6–14, आयु समूहों और किशोरियों पर केंद्रित होते हैं। प्राथमिकता यह सुनिश्चित करना होती है :

आंगनवाड़ी के माध्यम से आरंभिक बाल देखभाल प्रोग्राम; स्कूली आयु के बच्चों का स्कूल जाना; तथा किशोर आयु वाले स्कूल छोड़ने वाले बच्चों का फिर से स्कूल जाना और यदि वे स्कूल नहीं जा सकते तो वे अपनी क्षमताएं विकसित करने के लिए अन्य शिक्षण केंद्रों के माध्यम से जीवन–कौशल सीखें।

निम्न तालिका, पार्टनरों को उनके प्रोग्राम डिजाइन की एक *त्वरित समीक्षा* (quick review) की सुविधा देती है। (त्वरित) समीक्षा से यह आकलन करने में मदद मिलती है कि किसी प्रोग्राम को इसके जेंडर समावेशी और समता के लक्ष्य पूरे करने के लिए कितनी अच्छी तरह से या जेंडर संवेदनशील तरीकों से नियोजित और डिजाइन किया गया है।

प्रोग्राम डिजाइन की योजना			
नोट : तालिका की विषयवस्तु सांकेतिक है। पार्टनर अपने प्रोग्राम डिजाइन के अपने विशिष्ट लक्ष्य और प्रविधियां/रणनीतियां और प्रत्याशित परिणाम जोड़ें			
प्रोग्राम के दौरान पूरे किए जाने के लिए निर्धारित किए गए लक्ष्य	**उदाहरण** : सीमांत समुदायों की बालिकाओं पर विशेष फोकस के साथ सभी बच्चों के लिए गुणवत्तापरक शिक्षा	निर्धारित लक्ष्य पूरे करने की प्रविधियां	**उदाहरण** : ▪ सामुदायिक लामबंदी/जागरूकता ▪ शिक्षण प्रक्रियाओं का उन्नयन (उदा. मातृभाषा आधारित शिक्षण सहायक सामग्रियों की शुरूआत; शिक्षकों का प्रशिक्षण) ▪ स्कूल में नामांकनों में सुधार ▪ स्कूल छोड़ने वालों को पुनः स्कूल जाने हेतु प्रोत्साहित करना ▪ जनपैरवी/साझेदारियां
निर्धारित लक्ष्यों की प्राप्ति मापन हेतु निर्धारित मापदंड	**उदाहरण** : बालिकाओं सहित स्कूली आयु वाले सभी बच्चों का स्कूलों में नामांकन; बालिकाओं सहित स्कूल छोड़ने वाले सभी बच्चों को स्कूल वापस भेजना	प्रविधि लड़कियों और लड़कों, किशोरों व युवाओं (महिलाओं और पुरूषों) दोनों को लक्षित है	**परिणाम** : सभी बच्चों को शिक्षित करने के संबंध में सामूहिक सामुदायिक जनमत और अभिरूचि तैयार करना
प्रोग्राम की हस्तक्षेप रणनीतियां जेंडर संवेदी तरीके से नियोजित हैं	**परिणाम** : प्रत्येक रणनीति, शिक्षा तक (तथा शिक्षण के अवसरों तक) लड़कियों व लड़कों की असमान पहुंच कम करने में सहायक है	प्रोग्राम की रणनीतियों में लड़कियों और लड़कों (महिलाओं व पुरूषों) की आवश्यकताओं, सरोकारों व अभिरूचियों/हितों पर विचार किया गया है	**परिणाम** : मातृभाषा आधारित शिक्षण अधिगम सामग्रियों के माध्यम से लड़कियों व लड़कों को आरंभिक साक्षरता गणितीय और विज्ञान के ज्ञान जैसे विभिन्न अवसरों से अधिक तेज गति से लाभान्वित करने वाली गतिविधियां
प्रोग्राम डिजाइन की योजना इस तरह से बनाई जाती है कि यह सकारात्मक प्रभाव बढ़ाने (और किन्हीं नकारात्मक प्रभावों को घटाने या समाप्त करने) के लिए समायोजित/संशोधित की जा सकती है।	अवर्गीकृत डेटा का संग्रह, शिक्षा तक लड़कियों व लड़कों की पहुंच व भागीदारी का स्तर निर्धारित करने में सहायक होता है।	प्रोग्राम नियोजन और डिजाइन में, बाधाओं की पहचान तथा संभावित सुधारों के अन्वेषण हेतु गुंजाइश रखी जाती है।	भावी सुधार खोजने के लिए प्रत्येक रणनीतिक हस्तक्षेप के निष्कर्ष/परिणाम विश्लेषित किए जाते हैं। *(नीचे क्रियान्वयन संबंधी अनुभाग भी देखें)*
प्रोग्राम प्रबंधन टीम के कार्य विवरण में प्रोग्राम परिणामों की निगरानी और मूल्यांकन के लिए जेंडर विश्लेषण टूल प्रयोग करना शामिल है।		प्रोग्राम डिजाइन में जेंडर टूल और विश्लेषण के बारे में कर्मचारियों का क्षमता सृजन और प्रशिक्षण शामिल है।	

क्रियान्वयन

(हस्तक्षेप के लिए विविध रणनीतियां)

अपने निर्धारित लक्ष्य और प्राथमिकताओं की प्राप्ति के लिए पार्टनर, हस्तक्षेप की अनेक रणनीतियां (नीचे तालिका देखें) प्रयोग करते हैं। यह महत्वपूर्ण है कि ये रणनीतियां – चाहे वे जिस स्वरूप में हों – प्रोग्राम परिणामों में सतत् सुधार करने वाली हों; वे सावधानीपूर्वक किए गए अवर्गीकृत डेटा संग्रह के माध्यम से चिन्हित सही समूह (बच्चों) को लक्षित करती हों; ऐसे हस्तक्षेपों के उद्देश्यों और वांछित परिणामों की स्पष्ट समझ हो। साथ ही, हस्तक्षेप की आवश्यकतानुसार प्रशिक्षण और सहायता भी महत्वपूर्ण है। इसके अलावा, इसकी प्रगति की समीक्षा और निगरानी, प्रोग्राम क्रियान्वयन का एक अभिन्न अंग होता है।

नीचे दी गई तालिका में कुछ ऐसे हस्तक्षेपों के बारे में टिप्पणियां दी गई हैं, जो वर्तमान में एनईजी–फायर पार्टनरों द्वारा लागू किए जा रहे हैं। पार्टनरों द्वारा प्रत्येक कॉलम में सूचना भरे जाने के साथ, यह उन्हें इसे समझने में सक्षम बनाएगा कि उनके हस्तक्षेप कितने प्रभावी हैं/या उनके प्रोग्रामों को जेंडर के प्रति अधिक संवेदनशील बनाने के लिए ऐसे हस्तक्षेपों को किस तरह से और सुदृढ़ बनाया जा सकता है।

नमूना बॉक्स

कृपया पार्टनर, हस्तक्षेप रणनीतियों की सूची में जोड़ें
कॉलम भरने के बारे में तीन उदाहरण दिए गए हैं। विषयवस्तु केवल सांकेतिक है।
पार्टनर सभी कॉलम भरें/अपनी प्रत्येक रणनीति की निर्दिष्ट तरीके से समीक्षा करें।

हस्तक्षेप रणनीति	संघटन (लक्षित समूह)	उद्देश्य/भूमिका	पार्टनरों द्वारा प्रदान सहायता और प्रशिक्षण	उपलब्धियां (इस रणनीति के परिणामस्वरूप)	हस्तक्षेप जेंडर समावेशी लक्ष्यों की प्राप्ति की दिशा में योगदान करता है (हां/नहीं/आंशिक)	यदि हां, तो उदाहरण बताएं– कैसे? यदि नहीं/आंशिक तो कारण बताएं–क्यों?
माता समितियां	आंगनवाड़ी जाने वाले बच्चों की माताएं	▪ गांव में सभी बच्चों (0–6) का आंगनवाड़ी जाना सुनिश्चित करना, ▪ मानदंड के अनुसार आंगनवाड़ी पर पका हुआ दैनिक आहार परोसा जाना	स्वच्छता और साफ–सफाई का प्रशिक्षण शिक्षा, विशेष. कर बालिका शिक्षा के महत्व पर संवेदीकरण	आंगनवाड़ी साफ रखे जाते हैं; भोजन स्वच्छ तरीके से परोसा जाता है माता समितियां, गांव में सभी (0–6) बच्चों का रिकार्ड रखती हैं	नहीं	सदस्यों के पास अनुवर्तन के लिए तथा सभी बालिकाओं द्वारा आंगनवाड़ी सुविधाओं के लाभ प्राप्त करना सुनिश्चित करने के लिए बच्चों की संकलित सूची नहीं है, सदस्य जेंडर संबंधित मुद्दों को लेकर ज्यादा जागरूक नहीं हैं; न ही वे इस पर चर्चाएं करते हैं

Contd...

किशोरी समूह	किशोरियां (पार्टनरों के लिए, किशोरी समूह में सामान्यतया 6–14 वर्ष आयु की लड़कियां शामिल होती हैं)	किसी गांव की किशोरियों को एकजुट करना और उन्हें कुछ जीवन–कौशल सीखने में मदद करना उनकी आयु की लड़कियों से संबंधित मुद्दों और चुनौतियों पर उनसे चर्चा करना युवा लड़कियों को परामर्श सेवाएं प्रदान करना	शिक्षण केंद्र खोलना, जो कौशल आधारित प्रशिक्षण (उदा. कम्प्यूटर साक्षरता) प्रदान करने के लिए खोले गए हों; किशोरावस्था संबंधी मुद्दों (उदा. प्रजनन स्वास्थ्य) के बारे में जानकारी देना	अनेक लड़कियों की स्कूलों में वापसी लड़कियों द्वारा अपने अभिभावकों / समुदाय के समक्ष सामूहिक रूप से मुद्दे उठाना और उनके समाधान करना (उदा. बाल विवाह की रोकथाम)	आंशिक	लड़कियों को वह विधिवत प्रशिक्षण नहीं दिया गया जिससे वे अपने सरोकारों वाले विशिष्ट मुद्दों के प्रति भलीभांति जागरूक हो सकती थीं जीवन–कौशल प्रशिक्षण सामान्य और प्राथमिक है; लम्बे समय में उपयोगी होने की संभावना नहीं है
किशोर समूह						
बाल मंच						
बाल अधिकार मंच (बीएएम)						
शैक्षिक नेता						
स्वयंसेवक						
स्कूल प्रबंधन समितियों (एसएमसी) (के कार्य में सहायता)						
मातृभाषा आधारित शिक्षण अधिगम सामग्रियां (टीएलएम)						
सूचना / जागरूकता अभियान	समुदाय, अभिभावक, बच्चे, युवा	शिक्षा का अधिकार के महत्व को लेकर जागरूकता उत्पन्न करना	पुस्तिकाओं, पोस्टरों के माध्यम से प्रचार–प्रसार	समुदाय, अभिभावक बेहतर जागरूक हैं	हां	जेंडर संबंधित सूचनाप्रद सामग्रियों के कारण लड़कियों का स्कूलों में नामांकन बढ़ा है।
शिक्षक प्रशिक्षण						
स्वयं सहायता समूह						

निगरानी और मूल्यांकन

(परिणाम स्तरों का आकलन)

परियोजना/प्रोग्राम क्रियान्वयन तथा जारी काम–काज सही दिशा में बने रहना सुनिश्चित करने के लिए निगरानी एक सतत आंतरिक प्रबंधन गतिविधि है। यह आकलन करने के लिए मूल्यांकन एक आंतरिक या बाहरी क्रियाकलापन के रूप में किया जा सकता है कि कोई परियोजना या प्रोग्राम अपने वांछित उद्देश्य प्राप्त कर रहा है कि नहीं।

पार्टनर, अनेक रणनीतियों के माध्यम से हस्तक्षेप कर रहे हैं। जहां इन रणनीतियों की समीक्षा अनिवार्य है क्योंकि यह पार्टनरों को उनके कार्य बेहतर ढंग से संचालित करने में सक्षम बनाती है, वहीं निगरानी और मूल्यांकन, प्रोग्राम चक्र का एक मुख्य भाग है क्योंकि इससे यह समझने में मदद मिलती है कि रणनीतियां अपेक्षित परिणामों जैसे कि शिक्षा तक पहुंच; शिक्षण प्रक्रियाएं; परिणामों; और अवसरों की प्राप्ति में सहायक हो रही हैं कि नहीं।

पार्टनर समीक्षा कर सकते हैं कि निगरानी और मूल्यांकन की उनकी वर्तमान प्रणाली में निम्न शामिल हैं कि नहीं :

निगरानी और मूल्यांकन जांचसूची			
1. निगरानी और मूल्यांकन, प्रोग्राम क्रियान्वयन के समस्त चरणों में एकीकृत है	2. निगरानी और मूल्यांकन के लिए मुख्य जेंडर संबंधित मुद्दे चिन्हित किए गए हैं	3. संकलित डेटा संग्रह (यह *उदाहरण के लिए* स्कूल न जाने वाली लड़कियों और लड़कों के चिन्हांकन में सहायक है)	4. संकलित डेटा का विश्लेषण किया जाता है और प्रोग्राम डिजाइन हेतु मार्गदर्शन दिया जाता है
5. शिक्षा से वंचित या स्कूल छोड़ने के जोखिम का सामना कर रहे बच्चों, विशेषकर लड़कियों की आवश्यकताओं व चुनौतियों को स्पष्ट पहचाना गया है (और उसके कारणों का विश्लेषण किया गया है)	6. यह सुनिश्चित करने की व्यवस्था अपनाई गई है कि स्कूल न जाने वाले/छोड़ चुके बच्चे भी नामांकन कराएं और पढ़ें (शैक्षिक अवसरों से)। उदाहरण के लिए, गठित सामुदायिक समूह इसे सुगम बनाते हैं	7. पहले से स्कूलों में उपस्थित लेकिन गुणवत्तापरक शैक्षिक प्रोग्रामों से वंचित बच्चों को चिन्हित करने की व्यवस्था (उदाहरण के लिए, शैक्षिक नेता/स्वयंसेवक ऐसे बच्चों की पहचान में मदद करते हैं जो पूरक शिक्षा केंद्रों (एसईसी) पर नहीं आते, और उनको आने के लिए प्रोत्साहित करते हैं)	8. संवाद रणनीतियां/सामग्रियां, समुदाय में, अभिभावकों में शिक्षा का अधिकार, व लड़कियों व लड़कों के लिए इसके महत्व पर जागरूकता उत्पन्न करती हैं
9. निगरानी और मूल्यांकन प्रणाली सहभागितापूर्ण है (यह प्रोग्राम में आवश्यक समायोजन करने में सहायक है)	10. प्रोग्रामों की निगरानी और मूल्यांकन प्रणाली, लड़कियों व लड़कों (महिलाओं व पुरूषों) दोनों पर प्रोग्राम के प्रभावों का स्पष्ट मापन करती है	11. निगरानी और मूल्यांकन डेटा : *उपलब्धियों को रेखांकित करता है; समस्या वाले क्षेत्रों को चिन्हित करता है जिन पर विशेष ध्यान देने की आवश्यकता हो; साथ ही प्रोग्राम के समावेशन और समता के लक्ष्यों की प्राप्ति में चुनौतियों को भी नोट करता है*	12. निगरानी और मूल्यांकन के स्पष्ट उद्देश्यों, जेंडर संबंधी विश्वसनीय संकेतकों, तथा सावधानीपूर्वक डेटा संग्रह के बाद जेंडर विश्लेषण और स्पष्ट निष्कर्षों के साथ भलीभांति योजना बनाई गई है।

नोट : प्रभावी निगरानी और मूल्यांकन के मार्गदर्शन/करने के लिए विशेषज्ञों के सहयोग की आवश्यकता हो सकती है। पार्टनर (और उनके दानदाता) यह तय कर सकते हैं कि सांगठनिक क्षमताओं और कौशलों के अनुसार किसी विशेषज्ञ की आवश्यकता है कि नहीं।

यदि पार्टनर, उक्त जांचसूची पूरी करते हैं, तो उनको उदाहरण के लिए, निम्न के बारे में विशिष्ट जानकारी रखनी आवश्यक होगी :

- शिक्षा प्रणाली के विभिन्न स्तरों में से प्रत्येक में स्कूलों में नामांकित लड़कियों और लड़कों की संख्या
- लड़कियों और लड़कों की संख्या, जो कक्षा 5 पार कर गए हों
- स्कूलों में लड़कियों और लड़कों की उपस्थिति की नियमितता
- स्कूली शिक्षा के वर्ष दोहराने वाले लड़कियों और लड़कों की संख्या
- लड़कियों और लड़कों के स्कूली शिक्षा के वर्षों की औसत संख्या
- शिक्षा के स्तरों के बीच लड़कियों और लड़कों का पारगमन (ईसीसीई–प्राथमिक; प्राथमिक–माध्यमिक; माध्यमिक–तृतीयक / व्यावसायिक)
  - स्कूलों से बाहर बच्चों की संख्या : स्कूल से बाहर सभी बच्चों में xx% लड़कियां हैं; स्कूल से बाहर सभी बच्चों में xx% लड़के हैं (स्कूल से बाहर होने के कारण)
  - प्राथमिक शिक्षा में: xx छात्रों में से (उपलब्ध डेटा के साथ), xx लड़कियों ने जेंडर साम्यता नहीं प्राप्त की (स्कूल न जाने के कारण)
  - माध्यमिक शिक्षा में: xx छात्रों में से (उपलब्ध डेटा के साथ), xx लड़कियों ने जेंडर साम्यता नहीं प्राप्त की (माध्यमिक शिक्षा प्राप्त न करने के कारण)
  - तृतीयक शिक्षा की ओर पारगमन : xx छात्रों में से ;उपलब्ध डेटा के साथ), xx लड़कियों ने जेंडर साम्यता नहीं प्राप्त की (तृतीयक / व्यावसायिक अध्ययन न करने के कारण)
- महिला व पुरूष शिक्षकों की संख्या (एक संकेतक जो शिक्षण आपूर्ति में साम्य दर्शाता है)

उक्त सूचना के आधार पर, की जा रही तीन विशिष्ट गतिविधियां सूचीबद्ध करें :

गतिविधियां	उद्देश्य	परिणाम (मात्रात्मक आंकड़े उपलब्ध कराएं जहां लागू हों)
1. (उदाहरण) : पूरक शिक्षा केंद्र (एसईसी) शुरू किए	स्कूली शिक्षा से जोड़ने के लिए ब्रिज स्कूल के रूप में कार्य करने के लिए, गुणवत्तापरक शिक्षा सुगम बनाने व बच्चों की शिक्षा में सुविधा के लिए	स्कूलों में उपस्थिति नियमितता में वृद्धि हुई; लड़कियां प्राथमिक से माध्यमिक स्कूलों में पहुंचीं
2.		
3.		

सांगठनिक क्षमता

हस्तक्षेप सबसे दक्ष तरीके से तैयार किए जा सकते हैं। हालांकि इसका क्रियान्वयन, संगठन की क्षमताओं और कौशलों पर निर्भर होता है। *अनेक–मुख्य प्रश्न उत्पन्न होते हैं :*

- क्या जेंडर को अपने कार्य में एकीकृत करने के लिए संगठन के पास संस्थागत क्षमता है?
- क्या इसके पास उन मुद्दों व संरचनाओं की समझ है जो जेंडर आधारित परिणामों को प्रभावित करती हैं?
- क्या कर्मचारी, जेंडर संबंधी मुद्दों पर जागरूकता के लिए भलीभांति प्रशिक्षित हैं और सहानुभूतिपूर्ण हैं?
- क्या जेंडर आधारित विश्लेषण करने के लिए और बाद में ऐसे इनपुट प्रदान करने के लिए कर्मचारियों के पास आवश्यक कुशलताएं हैं जो संगठन की प्रदायगी प्रणालियां / हस्तक्षेप रणनीतियां सुदृढ़ बनाने के लिए उपयोग किए जा सकें?

- क्या संगठन के पास लड़कियों और लड़कों (महिलाओं और पुरूषों) की बदलती परिस्थितियों/ज़रूरतों के अनुसार अपना ढांचा और काम–काज अनुकूलित करने के लिए पर्याप्त लचीलापन है?

यदि इनमें से प्रत्येक प्रश्न का उत्तर हां में है; तो वह संगठन जेंडर पथ/रास्ते पर है। सांगठनिक क्षमता और विकास के बारे में अगले अनुभाग (अनुभाग 4 : शैक्षिक परियोजनाओं में जेंडर एकीकृत करने का कार्य) में विस्तार से चर्चा की जाएगी।

रिपोर्टिंग और दस्तावेजीकरण

रिपोर्टिंग और दस्तावेजीकरण (आरएंडडी) समग्र प्रोग्राम चक्र का अंग है और इसलिए इसे किसी भी स्तर पर, जिनमें प्रोग्राम की वास्तविक योजना और कार्यान्वयन से पहले परिस्थितियों की पहचान और मूल्यांकन शामिल हैं, अनदेखा नहीं किया जा सकता।

- प्रत्येक परियोजना/प्रोग्राम एक प्रक्रिया से गुजरता है। उचित तरह से आरएंडडी किए जाने से न केवल प्रोग्राम चक्र का दस्तावेज तैयार करने में बल्कि इस बारे में चिंतन करने में भी मदद मिलती है कि प्रोग्राम ने अपनी वांछित कार्यवाहियों/उपलब्धियों की तुलना में वास्तव में किस तरह से आकार ग्रहण किया– वांछित परिणामों/सकारात्मक प्रभावों की तुलना में कौन से परिणाम/प्रभाव प्राप्त किए।
- आरएंडडी इस बारे में चिंतन है कि क्या और कैसे प्रोग्राम की गतिविधियां, प्रोग्राम की योजना/डिजाइन में स्थापित उद्देश्यों की पूर्ति कर रही हैं। आरएंडडी में जेंडर–अवर्गीकृत और जेंडर संबंधित सूचनाएं/आंकड़े समयबद्ध व व्यवस्थित रूप से संग्रहीत करने पर यह अधिक सुदृढ़ बनता है। यह समग्र विकास प्रभावक्षमता उन्नत बनाने के लिए प्रोग्राम हस्तक्षेपों का उचित संशोधन/परिष्करण सुगम बनाता है जब किसी एक लिंग पर विपरीत प्रभाव चिन्हित किया गया हो।

ऐसा करें	ऐसा मत करें
▪ परियोजना सूचनाओं को अनवरत रूप से रिकार्ड करते रहें ▪ आपके पास आवश्यक जानकारी होना सुनिश्चित करने के लिए एक जांचसूची का प्रयोग करें ▪ अवर्गीकृत डेटा एकत्रित करें ▪ जेंडर विश्लेषणात्मक जानकारी प्रदान करें ▪ अर्थभेद जोड़ें (उदा. सफलता की कहानियां जो जेंडर पूर्वाग्रहों के समाधान करती हों और बालिका शिक्षा प्रोत्साहित करती हों)	▪ दस्तावेज मानदंड समझे बिना लिखना मत शुरू करें ▪ दीर्घ वर्णनात्मक रिपोर्टें मत लिखें; सरल और संक्षेप में लिखें–अपेक्षाओं पर कायम रहें ▪ रिपोर्ट लिखने के समय तक प्रतीक्षा मत करें ▪ केवल अपने दानदाता (एनईजी–फायर) के लिए रिपोर्टें मत लिखें, परियोजना के बारे में जानकारियां निर्धारित समय सीमाओं पर रिकार्ड करने से आपके कार्य की बेहतर समीक्षा करने में मदद मिलती है।

शिक्षा द्वारा लोगों के दृष्टिकोणों में परिवर्तन, नए प्रकार के व्यवहारों के प्रति प्रेरणा, तथा अंततः सामाजिक बदलाव में योगदान के बारे में असंख्य उदाहरण मौजूद हैं। एनईजी–फायर के पार्टनरों के पास दिखाने के लिए अनेक उदाहरण हैं। उदाहरण के लिए, *किशोरी समूहों* के गठन, जिनमें किशोरियां शामिल होती हैं। ऐसे समूहों द्वारा प्रशिक्षणों, चर्चाओं में भाग लेकर लड़कियां शीघ्र विवाह की प्रथा के विरूद्ध संघर्षरत हैं। वे अपनी स्कूली पढ़ाई जारी रखने के पक्ष में अपने अभिभावकों को सहमत कर रही हैं। वे महिलाओं के विरूद्ध हिंसा व बाल विवाह पर समुदाय–स्तर पर चर्चाएं शुरू कर रही हैं। प्रायः परिवर्तनों के ऐसे उदाहरण अनदेखे रह जाते हैं या जो सबक इनसे सीखे जा सकते थे वे समुचित रूप में उल्लेखित नहीं किए जाते।

अनुभाग 4

शैक्षिक परियोजनाओं में 'जेंडर एकीकरण'

शैक्षिक परियोजनाओं में जेंडर एकीकरण का कार्य, शिक्षा में एक रूपांतरणकारी प्रविधि है जो उन तरीकों की समझ और विचार के साथ शुरू होती है जिनसे लड़कियां और लड़के, महिलाएं और पुरूष शिक्षा प्रणाली तक भिन्न प्रकार से पहुंचते और प्रतिभाग करते हैं। इसमें न केवल किसी विशिष्ट समय पर स्कूली प्रणाली में नामांकनों का अवलोकन शामिल है, बल्कि शिक्षा पूरी करने संबंधी मुद्दे, अधिक उन्नत स्तरों तक स्थानांतरण की दरें, सीखने की पद्धतियां, शिक्षण प्रविधियां सहित गुणवत्ता संबंधी विविध सरोकार आदि इसमें आते हैं। कुल मिलाकर, यह सुनिश्चित करती है कि सभी आयु वाले लड़कियां और लड़के महिलाएं और पुरूष शिक्षा के माध्यम से अपनी पूरी क्षमता विकसित करें।

अनुभाग के उद्देश्य

यह अनुभाग, पार्टनरों को यह समझने में मदद के लिए है कि शैक्षिक परियोजनाओं में जेंडर एकीकृत करने के लिए एक बहुत संवेदनशील व रूपांतरणकारी प्रविधि की आवश्यकता होती है। ऐसी प्रविधि का विकास सांगठनिक क्षमता व विकासात्मक निर्णयों के अनुरूप किया जाना चाहिए जिसमें विभिन्न हितधारकों से सार्थक साझेदारियों का विकास शामिल किया जा सके।

दो प्रमुख मुद्दे

शैक्षिक परियोजनाओं में जेंडर एकीकरण का कार्य मुख्य रूप से परियोजना के प्रबंधन व क्रियान्वयन में संलग्न संगठन व इसके कर्मचारियों के कौशलों, ज्ञान और प्रतिबद्धता पर निर्भर है। यह अनुभाग दो प्रमुख मुद्दों पर फोकस करता है जो पार्टनरों के जेंडर एकीकरण के कार्य को सुगम बना सकते हैं। ये मुद्दे निम्न हैं :

- सांगठनिक क्षमता और विकास
- विभिन्न हितधारकों से साझेदारियों का विकास

सांगठनिक क्षमता और विकास

सांगठनिक क्षमता सृजन गतिविधियां परियोजना दस्तावेजों में स्पष्ट रूप से शामिल होनी चाहिए, कर्मचारियों (व बजट) से समर्थित होनी चाहिए और परिवर्तन के उचित संकेतकों के माध्यम से इनकी निगरानी व समीक्षा की जानी चाहिए।

> प्रशिक्षण मूल्यवान होता है जब यह पार्टनरों को जेंडर से संबंधित मुद्दे समझने में, उनके परिणामों पर चिंतन करने में, सभी स्तरों पर तथा समस्त गतिविधियों के माध्यम से जेंडर संबंधी असमानता हल करने की ज़रूरत समझने में, और इस तरह जेंडर को लेकर संवेदनशील निर्णय करने में सक्षम बनाता है।

जेंडर संबंधित प्रशिक्षणों वाली क्षमता सृजन गतिविधियां अधिक प्रभावी हो सकती हैं यदि उनमें चिंतनात्मक और विश्लेषणात्मक अभ्यास शामिल हों और विभिन्न प्रकार के व्यक्तिगत, अंतर्वैयक्तिक, सांगठनिक तथा वृहद सामाजिक मुद्दों के समाधान किए गए हों। केवल एक बार का प्रशिक्षण उपयोगी नहीं रहता। इसे अनवरत प्रक्रिया बनाया जाना चाहिए।

विभिन्न हितधारकों से साझेदारियों का विकास

रचनात्मक समाधान लागू करते हुए, अवसरों का लाभ उठाते हुए, संसाधनों का साझा करके, काम–काज उन्नत बनाकर और सामान्यतः सुचारू संचालन करते हुए साझेदारियों का विकास करने से समस्याएं हल करने के लिए प्रभावी और व्यावहारिक प्रविधि मिल सकती है।

अन्य जेंडर–विशेषीकृत संगठनों व विशेषज्ञों के साथ साझेदारी में कार्य करना; शिक्षा विभाग से विशिष्ट सहयोग में संलग्न होना; शिक्षा क्षेत्र से बाहर के पार्टनरों से भी जुड़ना, आदि साझेदारियों का विकास में शामिल हो सकता है। विभिन्न हितधारकों से साझेदारियों का विकास करने के लिए यह महत्वपूर्ण है कि एक–दूसरे के कार्य को सम्मान दिया जाए, अनुभव साझा किए जाएं, और ऐसे विशिष्ट लक्ष्यों हेतु संयुक्त पैरवी की जाए जो सामूहिक कार्यवाही द्वारा जेंडर आधारित समानता की प्राप्ति की दिशा में योगदान करते हों।

जांच–सूची बॉक्स का महत्व (नीचे तालिका देखें)

नीचे दिया गया जांच–सूची बॉक्स, पार्टनरों को जेंडर एकीकरण के उनके कार्य पर चिंतन में सक्षम बनाने के लिए, प्रश्नों की एक श्रृंखला के माध्यम से उनका मार्गदर्शन करने के लिए है।

पार्टनरों का प्रशिक्षण/क्षमता सृजन भी होता है; और वे पार्टनरशिप भी विकसित करते हैं। क्या इससे किसी के प्रोग्राम चक्र में जेंडर एकीकरण करने में मदद मिलती है? इसका उत्तर है : हां, ऐसा होता है। हालांकि कदाचित ही हम इस पर विचार करते हैं कि इस प्रकार के कदम किस तरह से हमारे कार्य में सहयोग करते हैं।

आपका प्रचालन का स्तर जो भी हो, आप कुछ ऐसे निश्चित परिवर्तन सदैव लागू कर सकते हैं जो जेंडर एकीकरण प्रेरित कर सकते हों। एक रणनीति बनाना महत्वपूर्ण बात है, जो जिसमें कर्मचारियों की क्षमताओं का विकास शामिल किया जा सके। यह कर्मचारियों को a) जेंडर विशिष्ट डेटा वाली सूचना प्रणालियां विकसित करने में, b) उपयुक्त जेंडर संकेतक विकसित करने में; तथा c) जेंडर विश्लेषण करने तथा निष्कर्षों का उपयोग अपनी हस्तक्षेप रणनीतियों के उन्नयन/संशोधन में करने में सक्षम बनाएगा। इसके अलावा पार्टनर अपने कार्य/जेंडर विश्लेषण निष्कर्षों को समान रूचि वाले अन्य संगठनों तक प्रसारित करने/उनसे साझा करने का विकल्प चुन सकते हैं तथा संयुक्त पैरवी और अभियानों की संभावनाएं तलाश सकते हैं। इससे कोई प्रासंगिक मुद्दा हल करने के लिए एक सामूहिक प्लेटफार्म बनाने के अलावा संसाधनों की साझेदारी भी की जा सकेगी।

इस अनुभाग से सीखने योग्य बिंदु

- जेंडर आधारित असमानताओं के मुद्दे हल करने के लिए उपयुक्त समझ, प्रतिबद्धता और क्षमता विकसित करना, एक दीर्घकालीन प्रक्रिया है। जेंडर समानता प्राप्ति की दिशा में की जाने वाली प्रगति की निगरानी के लिए पार्टनरों के पास क्षमता (तथा स्पष्ट प्रणालियां) अवश्य होनी चाहिए।
- समान क्षेत्रों या समान फील्ड में काम करने वाले विभिन्न कार्यकर्ताओं की पहचान, तथा खुले और प्रभावी संवाद द्वारा उनसे साझेदारियों का विकास, एक अधिक उत्पादक वातावरण तैयार करता है। सामूहिक रूप से सेवा प्रदायगी प्रणालियों को अधिक जिम्मेदार/जवाबदेह बनाते हुए सकारात्मक परिणाम/परिवर्तन प्रेरित करने के लिए भी यह महत्वपूर्ण है।

मुख्य सबक (आंतरिक चर्चाओं के दौरान पार्टनरों द्वारा भरे जाएं)

- .....
- .....
- .....

जांच–सूची बॉक्स

सांगठनिक क्षमता तथा विकास
(नमूना बॉक्स–रेखांकित परिणाम/कमियां केवल सांकेतिक हैं)
पार्टनर अपने क्षमता विकास/प्रशिक्षणों का मूल्यांकन करने के लिए सभी कॉलम भरें

मुद्दे	परिणाम (प्रत्येक परिणाम/निष्कर्ष नोट करें)	कमियों की पहचान (प्रत्येक चिन्हित कमी नोट करें)
सांगठनिक कर्मचारियों का जेंडर संबंधी संवेदीकरण और प्रशिक्षण	जेंडर और संबंधित मुद्दों के बारे में कर्मचारी जागरूक हैं जो बालिका शिक्षा को प्रभावित करते हैं	जेंडर एकीकरण को संगठन हेतु रणनीति के बजाय अभी एक लक्ष्य मानकर ही व्यवहार किया जाता है
शैक्षिक परियोजनाओं में जेंडर एकीकरण के बारे में जानकारी और तकनीकी ज्ञान	दस्तावेजीकरण सामूहिक पर्याप्त और प्रासंगिक लिंग–अवर्गीकृत सूचनाओं पर आधारित है; निगरानी प्रक्रिया में जेंडर प्रतिक्रियाशील संकेतक शामिल हैं	जेंडर विश्लेषण के टूल और संकेतक उपयोग करने में विफलता
समय–समय पर संवेदीकरण और प्रशिक्षण	एक बार, या जानने की आवश्यकता के आधार पर प्रशिक्षण प्रोग्राम आयोजित किए जाते हैं	जेंडर विश्लेषणात्मक टूल्स का उपयोग करके जेंडर को प्रोग्राम चक्र में एकीकृत करने के लिए कर्मचारी पर्याप्त सुसज्जित नहीं हैं
कर्मचारियों को प्रशिक्षित करने के लिए सुयोग्य प्रशिक्षकों को आमंत्रण	थीमैटिक और जेंडर विशेषज्ञ आमंत्रित किए जाते हैं	सामान्य मुद्दे, और पार्टनर के कार्य से संबंधित गैर–विशिष्ट मुद्दे प्रशिक्षण में शामिल हैं
संवेदीकरण व प्रशिक्षण का प्रभाव	कर्मचारी ऐसी बाधाओं का विश्लेषण करने में सक्षम हैं जो लड़कियों व महिलाओं को शैक्षिक अवसर व लाभ प्राप्त करने से रोकती हैं; उनको अधिक प्रभावी ढंग से लक्षित करने की रणनीतियां विकसित करते हैं; और लक्षित रणनीतियां की प्रभावक्षमता की निगरानी करते हैं	लक्षित रणनीतियों की प्रभावक्षमता की निगरानी जेंडर लेन्स के माध्यम से, जेंडर विश्लेषण टूल और संकेतकों का इस्तेमाल करते हुए नहीं की जाती
आगामी संवेदीकरण व प्रशिक्षण हेतु संगठन की भावी योजनाएं	संगठन ने अपने कार्य में सुगमता के लिए एक सुनियोजित प्रशिक्षण प्रोग्राम तैयार किया है	प्रशिक्षण के व्यवस्थित/सुसंगठित प्रारूप की योजना नहीं बनाई गई
प्रशिक्षण हेतु आवश्यकता मूल्यांकन	संगठन उस प्रकार के प्रशिक्षण को लेकर जागरूक है जो इसके प्रोग्रामों को जेंडर प्रतिक्रियाशील बनाने के लिए आवश्यक है	अपेक्षित प्रशिक्षण हेतु आवश्यकता मूल्यांकन नहीं किया गया

प्रशिक्षण आवश्यकताएं लिखें, यदि कोई हों :

1.

2.

3.

विभिन्न हितधारकों के साथ साझेदारियों का विकास
नमूना बॉक्स–रेखांकित परिणाम/कमियां केवल सांकेतिक हैं)
पार्टनर, अन्य हितधारकों के साथ साझेदारी के विकास संबंधी अपने प्रयासों का मूल्यांकन करने के लिए सभी कॉलम भरें

मुद्दे	परिणाम (प्रत्येक परिणाम/निष्कर्ष नोट करें)	कमियों की पहचान (प्रत्येक चिन्हित कमी नोट करें)
साझेदारियों का विकास, जेंडर समानता को बढ़ावा देने के लिए संगठन के प्रयासों का एक अंग है	संगठन, (शिक्षा में) जेंडर समानता पर सामूहिक पैरवी में सक्षम है	साझेदारियों का विकास, संगठन के एजेंडे का भाग नहीं है
मुख्य हितधारकों की सूची	संगठन, उपयुक्त समूहों/एजेंसियों/थीमैटिक विशेषज्ञों की एक संपर्क सूची रखता है	ऐसी कोई सूची नहीं बनाई गई है
विभिन्न हितधारकों से संवाद	संगठन के कार्य की दूसरों से साझेदारी और प्रसार किया जाता है (मुद्दे पर जनमत बनाने के लिए भी)	अपना कार्य दूसरों से साझा नहीं करता
समान फील्ड (शिक्षा में) अन्य लोगों के कार्यों का ज्ञान	कुछ सर्वोत्तम प्रविधियों के बारे में जागरूक है और अपनी जेंडर हस्तक्षेप रणनीतियों को सुदृढ़ बनाने के लिए इनका उपयोग करता है	अन्य सर्वोत्तम प्रविधियों के बारे में जानकारी या ज्ञान नहीं है
विभिन्न हितधारकों से रणनीतिक संबंध बनाए रखता है	संगठन ने प्रमुख मुद्दों (उदा. सीमांत समुदायों, विशेषकर उनमें बालिकाओं के लिए शिक्षा के अधिकार का क्रियान्वयन) पर सामूहिक आवाज़ उठाने के लिए विभिन्न हितधारकों से नेटवर्किंग की एक रणनीतिक योजना बनाई हुई है।	ऐसी कोई रणनीतिक योजना नहीं बनाई गई है

अन्य हितधारकों के सहयोग से सामूहिक कार्यवाहियों के माध्यम से गतिविधियां/उपलब्धियां लिखें :

1.

2.

3.

समापन टिप्पणी

जेंडर निर्देशिका से सबक

यह जेंडर निर्देशिका, जेंडर एकीकरण की आवश्यकता तथा संभावित लाभ स्पष्ट करती है। इसमें विशिष्ट चरण बताए गए हैं जो पार्टनर अपने प्रोग्राम चक्रों को जेंडर संवेदनशील बनाने के लिए लागू कर सकते हैं।

इस निर्देशिका में इस पर जोर दिया गया है कि जेंडर संबंधी दृष्टिकोण व सरोकार समावेशित करना सभी के हित में है। ईमानदारी से किए जाने पर यह किसी प्रोग्राम की प्रासंगिकता व प्रभावक्षमता में काफी वृद्धि कर सकता है। महत्वपूर्ण है कि, यह इसे सुनिश्चित करने में योगदान कर सकता है कि प्रोग्राम उन वंचनाओं को प्रेरित न करें और/या गंभीर रूप न दें जिनका लड़कियां और महिलाएं अपने समुदायों (समाजों) में सामना करती हैं।

यदि समावेशन और समता, प्राप्त किए जाने वाले चरम लक्ष्य हैं, तो किसी प्रोग्राम की जेंडर संवेदनशीलता यह सुनिश्चित करती है कि लड़कियां और महिलाएं, लड़के और पुरूष दोनो की प्रोग्रामों में संलग्नता और भागीदारी बढ़ेगी, उनके सरोकारों, आवश्यकताओं और हितों/अभिरूचियों को समान रूप से और गंभीरता से ध्यान में रखा जाएगा और प्रोग्राम गतिविधियों में शामिल किया जाएगा।

जेंडर एकीकरण कार्य, एक गंभीर कार्य है। इसे एक बार किए जाने वाले अभ्यास की तरह नहीं लिया जा सकता। पार्टनरों को उनके कार्य की आवधिक या अनवरत निगरानी और समीक्षा करनी होती है। इससे उन्हें (स्वयं) क्रियान्वित शैक्षिक परियोजनाओं में –उनका जेंडर पथ मापने या अंकित करने में मदद मिलती है।

अपने प्रोग्राम हस्तक्षेपों और परिणामों के आधार पर, यदि कोई संगठन तीन व्यापक और बुनियादी प्रश्नों (नीचे बॉक्स देखें) पर हां में निशान लगाने में सक्षम है और विशिष्ट तथा सकारात्मक परिवर्तन उल्लेखित करने में सक्षम है तो ऐसी संभावना है कि वह संगठन, जेंडर संवेदनशील होने की राह पर है।

हमारा प्रोग्राम है		विशिष्ट परिवर्तन नोट करें (पार्टनर भरें – उदाहरण सांकेतिक हैं)
▪ बालिकाओं तथा युवा किशोरियों पर नकारात्मक प्रभावों की रोकथाम करने वाला	हां/नहीं	**उदाहरण :** बाल विवाह नहीं हस्तक्षेप वाले क्षेत्रों में बाल श्रम नहीं सभी बच्चे स्कूलों में नामांकित
▪ बालिकाओं तथा युवा किशोरियों हेतु लाभों को प्रोत्साहन देने वाला	हां/नहीं	**उदाहरण :** किशोरियां शिक्षण केंद्रों के माध्यम से जीवन–कौशल सीख/अर्जित कर रही हैं, जो उनको आय उपार्जन के अवसर खोजने में सक्षम बनाते हैं शिक्षण केंद्र, स्कूल छोड़ने वाली लड़कियों को फिर से स्कूलों में वापसी में सक्षम बना रहे हैं
▪ जेंडर समानता को प्रोत्साहन देने वाला	हां/नहीं	**उदाहरण :** प्राथमिक से माध्यमिक स्कूलों में जाने वाली लड़कियों और लड़कों (दोनों) की संख्या बढ़ी है।

इस निर्देशिका में प्रत्येक अनुभाग के तहत एक जांच–सूची बॉक्स/प्रश्न हैं। यदि पार्टनर जांच–सूची बॉक्स/प्रश्न भरते हैं तो ये उनको उन ठोस कदमों की पहचान करने में मदद करेंगें जो जेंडर एकीकरण की दिशा में उन्होंने उठाए (या नहीं उठाए) हैं।

यह सलाह दी जाती है कि प्रत्येक अनुभाग के अंतर्गत जांच–सूची बॉक्स/प्रश्न भरें। हालांकि त्वरित संदर्भ के तौर पर पार्टनर यह जांच सकते हैं कि नीचे उल्लेखित कुछ महत्वपूर्ण कदम उनके कार्य में शामिल हैं कि नहीं।

कदम	निशान लगाएं हां या नहीं	यदि हां तो क्या परिणाम नोट किए गए (सारे परिणाम नोट करें)	अगर नहीं तो कदम उठाने में असमर्थ रहने के कारणों का उल्लेख करें
नोट : नमूना बॉक्स। हां/नहीं के उत्तर और उदाहरण सांकेतिक हैं (पार्टनर, चरणों की सूची में जोड़ सकते हैं। पार्टनर, अपने कार्य के अनुसार सभी कॉलम भरें)			
बालिकाओं/किशोरियों के सरो. कारों, हितों/ अभिरूचियों और आवश्यकताओं को (कई हस्तक्षेपों/गतिविधियों के माध्यम से) प्रबल मान्यता	हां	**उदाहरण** : लड़कियां स्कूलों में हैं; बाल विवाह नहीं होते; या लड़कियों से बाल श्रम नहीं कराया जाता है	
लड़कियां और महिलाएं, शिक्षा/ क्षमता–सृजन हेतु विशिष्ट लक्षित समूहों में हैं	हां	**उदाहरण** : शिक्षण केंद्र स्कूल छोड़ने वाली किशोरियों को स्कूल वापसी में मदद कर रहे हैं	
समुदाय तक पहुंचने के लिए उपयोग की जाने वाली समस्त संवाद सामग्रियां, जेंडर संवेदी तरीके से विकसित की जाती हैं	हां	**उदाहरण** : जागरूकता सृजन, पक्षसमर्थन और अभियानों की संवाद/ संचार सामग्रियां स्थानीय भाषाओं में हैं, और लड़कियों और लड़कों के लिए समान अधिकारों व अवसरों को बढ़ावा देती हैं	
जेंडर समानता का सिद्धांत, पूरे प्रोग्राम चक्र में समावेशित किया गया है	नहीं		**उदाहरण** : प्रोग्राम गतिविधियों के माध्यम से लड़कियों और लड़कों की पहुंच और उनके द्वारा प्राप्त लाभों का आकलन करने के लिए जेंडर अवर्गीकृत डेटा एकत्रित नहीं किया गया
लड़कियों की शिक्षा को बढ़ावा देने के लिए कई सामुदायिक समूहों का गठन	हां/नहीं	**उदाहरण** : कई समूहों का गठन, समुदायों को आंगनवाड़ियों की कार्यप्रणाली, स्कूलों में मध्यान्ह भोजन की निगरानी करने के लिए लामबंद होने में सहायक है।	**उदाहरण** : सामुदायिक समूहों को जेंडर पूर्वाग्रहों के समाधान हेतु (उदा. स्कूल दूरी पर होने के बावजूद लड़कियों को माध्यमिक शिक्षा जारी रखने के लिए प्रोत्साहित करना) पर्याप्त सक्षम और प्रशिक्षित नहीं किया गया।

क्या आपका प्रोग्राम, सफल जेंडर संवेदनशील प्रोग्राम है?

यदि आपसे पूछा जाए : *क्या आपके संगठन के प्रयास, आपके प्रोग्राम को सफल जेंडर संवेदनशील शैक्षिक प्रोग्राम बनाने के लिए सही दिशा में जा रहे हैं?*

क्या आपका उत्तर हां में है?

तो आपके संगठन को कुछ कारक (factors) अवश्य पूरे करने चाहिए (नीचे देखें)। प्रोग्राम की सफलता इनमें से अनेक कारकों पर निर्भर करती है।

- एक जेंडर आधारित लक्ष्य होना (उदाहरण : सभी बालिकाओं सहित सभी बच्चों को स्कूल लाने का आपने सतत लक्ष्य बनाया हुआ है)।
- प्रोग्राम चक्र के सभी स्तरों पर, जेंडर संबंधी मुद्दों का एकीकरण करना (उदाहरण : लड़कियों व लड़कों की गुणवत्तापरक शिक्षा सुनिश्चित करने के लिए दोनों के हितों/अभिरूचियों, अनुभवों व चुनौतियों का प्रोग्राम में ध्यान रखा जाना।)
- लड़कियों और लड़कों, महिलाओं और पुरूषों की भिन्न ज़रूरतों के प्रति जागरूकता के कारण प्रोग्राम की शुरूआत में बजट का प्रभावी आवंटन करना (अर्थात प्रोग्राम में जेंडर एकीकरण में किन्हीं विफलताओं के उपचार हेतु किन्हीं अतिरिक्त लागतों की आवश्यकता नहीं होगी)।
- मिथक नष्ट करने, भेदभावों को चुनौती देने, तथा जेंडर समानता को प्रोत्साहित करने के लिए विभिन्न हस्तक्षेप गतिविधियों (उदा. अभियान सामग्रियों, शिक्षण अधिगम सामग्रियों, संवेदीकरण प्रशिक्षणों) के माध्यम से रणनीतिक तथा प्रभावी ढंग से संवाद करना।
- **संगठन में, कर्मचारियों के बीच इसे लेकर कोई असमंजस न होना कि जेंडर, जेंडर एकीकरण, और जेंडर समता का क्या अर्थ है; इसे बढ़ावा देने में संगठन की क्या भूमिका है, किस तरह इसकी कई रणनीतियों के माध्यम से इसे कैसे बढ़ावा दिया जाएगा।**
- परिस्थितिगत संदर्भ का आकलन करने के लिए; प्रोग्राम डिजाइन की योजना बनाने के लिए; प्रोग्राम परिणामों की निगरानी, मूल्यांकन और रिपोर्ट करने के लिए लिंग व अवर्गीकृत डेटा एकत्रित करना।
- साझेदारियों के विकास के माध्यम से भी सांगठनिक लक्ष्यों की दिशा में कार्य करना (उदा. समान रूचियों वाले अन्य संगठनों के साथ)।

बच्चों–लड़कियों और लड़कों– के शिक्षा के अधिकार के संदर्भ में किसी भी प्रकार के भेदभाव, वंचनाओं और उल्लंघनों का समापन करना पार्टनरों की प्रेरणा हो।

अनेक कारक (factors) पूरे करने तथा प्रमुख कदम उठाने (जैसा कि ऊपर बताया गया है) के साथ, इसमें कोई संदेह नहीं है कि संगठनों को शिक्षा के अधिकार तथा इसके महत्व के बारे में जागरूकता उत्पन्न करने के लिए समुदाय, अभिभावकों, शिक्षकों, बच्चों, किशोरों और युवाओं से लगातार संवाद बनाए रखना होता है। जब लोग अपने अधिकार जान जाते हैं तो उन पर दावा करने हेतु उनके सशक्त होने की संभावना ज्यादा रहती है। जागरूकता उत्पन्न करने के अलावा, पार्टनरों को उनके प्रोग्रामों की निगरानी तथा नियमित रिपोर्ट भी करनी होती है– न केवल एनईजी–फायर को बल्कि उनके अपने दस्तावेजीकरण कार्य के अंग के रूप में भी।

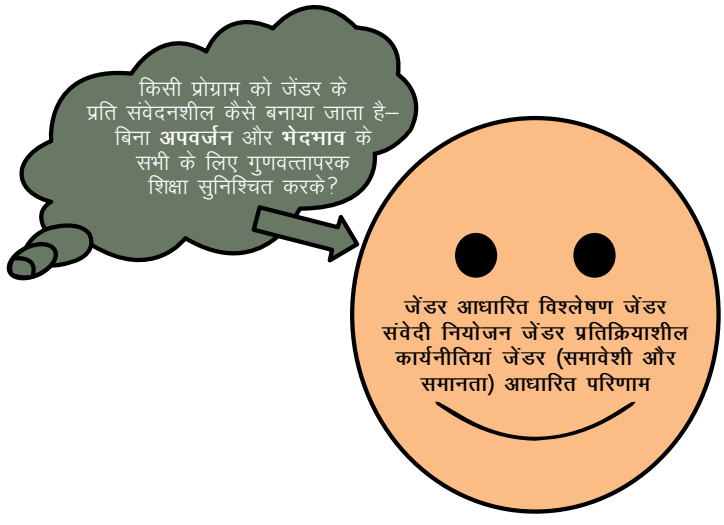

इससे उन्हें (संवेदनशील) मुद्दों के बेहतर समाधान में मदद मिलेगी जो स्थानीय संदर्भ में सांस्कृतिक रूप से स्वीकार्य हों। अंततः शिक्षा के अधिकार के पूर्ण क्रियान्वयन हेतु पक्षसमर्थन तथा इसके लिए राज्य को जिम्मेदार बनाने हेतु – साझेदारियां विकसित करने से सामूहिक आवाज़ और कार्यवाही को बल मिलता है।

शुभकामनाएं!

एनईजी-फायर (NEG-FIRE)
ए-1, तृतीय तल, सर्वोदय इंक्लेव, नई दिल्ली–110017
टेलीफैक्स – 91-11-26526570
ई-मेल – info@negfire.org
वेबसाइट – www.negfire.org